* जय गौर *

श्रीराधारमण-पदावली

लेखिका—

भक्तिमती श्री मोहिनीदेवी

सम्पादक—

ी रामदास शास्त्री, साहित्य रत्न महा मण्डलेश्वर

सहायक सम्पादक—

पं० विश्वेश्वर प्रसाद जी त्रिपाठी

प्रकाशक—

शिवराजपाल सिंह

रसमर्ज -

पुस्तक प्राप्ति स्थान

१. श्री रामदास जी शास्त्री, महा मण्डलेश्वर
चार सम्प्रदाय आश्रम, वृन्दावन

★

२. भागवत निवास, वृन्दावन

★

३. श्री १०८ बाबा कृष्णदास जी महाराज
महान्त ग्वालियर मन्दिर, कुसुम सरोवर, राधाकुण्ड

★

४. श्री ठाकुर रुद्रसिंह जी
पोस्ट व ग्राम रसमई, जिला मथुरा

★

५. श्री महान्त जी महाराज, गौड़ीय मठ
...य देहली

श्री राधारमणदेव जी महाराज
विराजमान, वृन्दावन

विक्रम सम्वत् पन्द्रहसौ निन्याबे, अरु बैसाख पूर्णिमा मास।
शालिग्राम से प्रकटे हरि, पूजी श्री भट्ट की आस॥
गोविन्द को मुखारविन्द, अरु गोपीनाथ को वक्षःस्थल।
तीनों को सम्मिलित रूप, मदनमोहन के चरण कमल॥
ऐसे राधारमण लखि, मोहिनी को भयो प्रेमोन्माद।
तब से व्याकुल प्रेम में, करती रहति विषाद॥

श्री मोहिनी देवी

चरण पलोटति मोहिनी, मांगति यह वरदान ।
राधारमण में प्रेम होय, नहिं चहिये कछु आन ।।
राधारमण तव चरन की, शरण लई मैं नाथ ।
यह संसार छुटाइयो, गहि कर पकड़ो हाथ ।।
राधारमण दयालु चित्त, मोहिनी वल्लभ लाल ।
अब न मोहिं बिसारयो, मेरी करहु संभाल ।।

❀ प्रकाशकीय निवेदन ❀

यह पुस्तिका 'श्री राधारमण पदावली' मोहिनी जी की इच्छानुसार उनके प्राण देव श्री राधारमण देव के चरणों में अर्पित है।

तथा निकुञ्ज लीला प्रात प्रातः स्मरणीय परम हंस चूडा-मणि श्रील अनन्त श्री विभूषित पं० जी श्री बाबा रामकृष्णदास जी महाराज और मोहिनी जी के बाबा गुरु परमाराध्य श्री १००८ श्री बनमालीलाल जी महाराज के प्रीत्यर्थ प्रकाशित की जा रही है।

तथा जिनके अनुग्रह से यह पुस्तिका छपी है उन श्री १००८ श्री बाबा कृपासिंधु दास जी महाराज तथा मोहिनी जी के गुरुदेव माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदायाचार्य श्री १००८ श्री गोस्वामी अरविंद लोचन जी महाराज को शत-शत प्रणाम के अनन्तर यह पुस्तक उनके कर कमलों में सादर समर्पित है।

❀ कृतज्ञता प्रकाशन ❀

इस पुस्तिका के पदों के उच्च व प्रेम भरे भाव होते हुए भी छन्द की बहुत त्रुटियाँ थीं जिनको अपना अमूल्य समय देकर महामण्डलेश्वर श्री स्वामी रामदास जी शास्त्री जी ने संशोधन किया है और उन्हीं की देख भाल में यह पुस्तिका छप रही है और उन्हों ने भूमिका भी लिखी है उनके परिश्रम के लिये मैं कृतज्ञता प्रकाशन करता हूँ।

पूज्य पं०कपीन्द्र जी भारतवर्ष में अपनी रामायण की विद्वता के लिये बहुत विख्यात् हैं उन्होंने भी आदि से अन्त तक इसे पढ़ा है और भूमिका लिखने की भी कृपा की है इसके लिये मैं उनका आभारी हूँ और अनेक धन्यवाद अर्पण करता हूँ।

शिवराजपाल सिंह बी० ए०
मु० पो० रसमई, जि० मथुरा

भूमिका नं : १

भगवान् की विश्व-वाटिका में समय-समय पर भांति-भांति के सुन्दर सुगन्ध युक्त पुष्प खिलते ही रहते हैं, वे पुष्प बड़े भाग्यशाली होते हैं—जो प्रभु के चरणों में समर्पित होकर अपने को धन्य-धन्य बना लेते हैं। कौनसा पुष्प प्रभु को स्वीकार है-यह तो प्रभु की इच्छा पर निर्भर है, उनकी कृपा किसी के बन्धन में नहीं है, भगवान् की कृपा किसी साधन से भी नहीं मिलती, उनकी कृपा तो स्वयं की अनुकम्पा पर निर्भर है, वे जब रीझते हैं ता गृद्ध, अजामिल जैसे पातकियों पर भी रीझ जाते हैं, नहीं तो—

कोटि कोटि मुनि यतन कराहीं।
अन्त राम कहुँ पावत नाही॥

योगी मुनि और बड़े-बड़े साधक उसकी कृपा को ढूंढ़ते-खोजते थक जाते हैं, परन्तु कोई विरला ही उनके प्रसाद को प्राप्त कर पाता है, श्रीमद् भगवद् गीता में स्पष्ट कहा है—

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद् यतति सिद्धये।
यततामपिसिद्धानां कश्चिन्मांवेत्ति तत्त्वतः॥

प्रभु की कृपा कई मार्गों से मिलती है, संसार से पूर्ण विरक्ति होने पर ही कृपा सुलभ होती है, वैराग्य कभी तो सत्संग से कभी सन्तों की–गुरुजनों की कृपा से प्राप्त होता है, भगवान् स्वयं ही जब कृपा का दान करते हैं–तब भक्त को विरागी बना देते हैं, श्रीमुख से कहा है—

"यदहमनुगृह्यामि हरिष्ये तद्धनं शनैः"

मैं जब कृपा करता हूं तो भक्त का धन, स्त्री आदि कुटुम्ब का अपहरण कर लेता हूं ताकि वह विरक्त होकर मेरी कृपा का अनुभव कर सके।

प्रस्तुत पुस्तक में लिखे पद एक ऐसे ही भक्त की दिव्य-वाणी के उद्गार हैं–जिसके ऊपर स्वयं ही भगवान् ने कृपा की, और कृपा दान के पूर्व समस्त संसार का बंधन छुड़ा दिया, पुत्र और धन-सम्पत्ति सबसे छुटकारा पाकर श्री मोहिनीदेवी ने अपने मोहन को–आराध्य श्री राधारमण को किस प्रकार रिझाया–यह उनकी दिव्य वाणी से प्रकट है। मोहिनीदेवी को किस प्रकार भगवान् ने शरण में लिया–यह उनकी जीवनी से स्पष्ट हो जाता है कि प्रभु की कृपा इस प्रकार प्राप्त होती है, कृपा ही नहीं–चित्रकूट की घटना उनके स्वरचित दोहों से स्पष्ट है। अयोध्या-चित्रकूट आदि पवित्र स्थलों में अपने आराध्य इष्टदेव श्री राधारमण को ही याद करती रहती थीं। एक दिन दिल्ली में स्वप्नावस्था में जब वे वृन्दावन पहुंचती हैं तो युगल सरकार श्री राधारमण लाल का दिव्य दर्शन पाकर उन्हें आदेश प्राप्त होता है—जिसे मोहिनीदेवी ने स्वरचित दोहों में प्रकट किया है–ब्रजेश्वरी श्री राधारानी उन्हें आश्वासन दे रही हैं—

मोहिनी अब धीरज धरहु, हम वेगि ही लेहिं बुलाय ॥
कछुक काम करि लोक में, करि व्रज रस विस्तार।
इतनी क्यों घबराइ तू, मिलि हैं कुञ्ज विहार ॥

मोहिनीदेवी के अन्तिम दिनों की उनकी जो भावना थी-वह एक दर्द भरी विरहा की थी, वे अपने आराध्य देव से बार-बार यही भीख माँगती हैं कि मैं तुम्हारी शरण में आ पड़ी हूँ-मेरी नाव के नाविक आप हैं, देखिये उन्हीं के दोहों में क्या ही सजीव चित्र है—

सब बल हारी सांवरे, एक तेरो बल है नाथ।
जीवन नैया पार कर, मेरो न छांड़ो साथ ॥
फिरि बिनवहुं मैं सांवरे, काटि देहु भव जाल।
त्राहि-त्राहि शरणहिं पड़ी, अन्त समय के काल ॥

मोहिनीदेवी के पदों की रचना भी समाधि भाषा में हुई है, भक्तों का स्वभाव प्रभु के गुण गान करना होता है, उनकी कविता छन्दो-वद्ध नहीं, भाव-वद्ध होती है, मोहिनीदेवी अपने प्रभु की भावभंगी और मुरली की मधुरिमा पर रीझ कर कह रही हैं—

मैं तो श्याम चरणों में परी, अब जग में नहिं नाचूंगी।
जबहिं सांवरे बंशी बजावैं, मधुरी मधुरी तान भरूंगी ॥
नयन मेरे दर्शन करि अटके, सुमिरत सुरति वचन सुखदाई।
रसना और कछु नहिं भाषत, श्याम-श्यामकी रटनि लगाई ॥

चित चंचल संग ही संग डोलत, लोक लाज मर्याद मिटाई।
मोहन ने हरि लियो मेरो मन, मोहिनीकी अब कहा बसाई॥

मोहिनीदेवी का देह-त्याग दिल्ली में भले ही हुआ, किन्तु उनका प्राण नन्द-नन्दन श्यामसुन्दर एवं ब्रजेश्वरी श्रीराधारानी की युगल छवि को साक्षात्कार करता हुआ ब्रज के लता-कुञ्जों में ही सखी बन कर प्रिया-प्रियतम की मधुमयी रासलीला का अलौकिक आनन्द में विभोर हो रहा है, क्योंकि वे अन्तःकरण से, समस्त इन्द्रियों से अपनी सम्पूर्ण भावना से प्रतिक्षण चिन्तन में ब्रजवास की प्रबल इच्छा रखती थीं, वैसे उन्होंने यह भविष्य-वाणी भी लिखी थी कि मेरा यह भौतिक शरीर दिल्ली में पूरा होगा–पर मेरे प्राण तो प्रियतम श्यामसुन्दर के चरणों में ही जाकर विश्राम लेंगे, ब्रजवास की कितनी उत्कट अभिलाषा उनके हृदय में थी–यह इस पद रचना से स्पष्ट होता है—

ब्रजरज छांड़ि न अन्तहिं जायेंगे।
नटवर रूप लगै अति नीको,
रूप चतुर्भुज हम न लुभायेंगे॥
स्वर्ग लोक को नाम न भावै,
ब्रज रज शीश चढ़ायेंगे।
मुक्ति हमें फीकी-सी लागै,
प्रेम भक्ति से लाड़ लड़ायेंगे॥
कल्प वृक्ष छाया नहिं भावै,
ब्रज वस तमाल सुख पायेंगे।
वहां न यमुना ना बंशीवट,
श्याम न गाय चरायेंगे॥

वहां न वत्स भाव नन्दजू को,
ना यशोदा लाल कहायेंगे।
वहां न रास रसैं ब्रज मोहन,
दधि माखन नहिं खायेंगे॥
जावै वलाय हमारी स्वर्ग में,
हम ब्रज में प्रेम चखायेंगे।
नटवर राखहु टेक मोहिनी,
ब्रज में प्राण गँवायेंगे॥

ब्रजवास की तीव्र अभिलाषा में स्वर्ग के महान् सुख भी तुच्छ प्रतीत हो रहे हैं, व्रज परिकर श्री नन्दबाबा यशोदा मां और व्रजलता कुञ्ज तथा तमाल-तरु की छाया ही मोहिनीदेवी के हृदय को आप्लावित कर रहे हैं।

लगभग सवासौ से ऊपर पद श्री मोहिनीदेवी ने लिखे हैं, दोहा तो सैकड़ों हैं, उनका जब अन्त समय निकट था, तब वे अपने आराध्यदेव श्री राधारमण और कलि पावनावतार श्री गौरचन्द्र से यही प्रार्थना करती थीं कि–प्यारे श्यामसुन्दर किसी तरह मुझे वृन्दावन में पहुंचा दो। उन्होंने अपनी अन्तिम मर्म भरी वाणी में पुकार कर कहा है—

"अघ अपराध काटि मोहिनी के,
अब मोहि दरश दिखावौ।
कृपा करहु हे ब्रजचन्द दुलारे,
मोहि वृन्दावन पहुंचावौ॥"

मोहिनीदेवी की रचित अन्य कई पुस्तक हैं, जिनमें "मोहिनी कविता कुञ्ज" प्रकाशित हो चुकी है। इसके अतिरिक्त शुकदूत, हंसदूत, गौराङ्ग चरित्र, श्रीकृष्ण चरित्र, ब्रज महिमा, वृन्दावन वास उत्कंठा, नारद चरित्र, कुमार चरित्र और कृष्णायन आदि ग्रन्थ लिखे हैं।

मोहिनीदेवी का परिवार भी धार्मिक एवं भगवद् भक्त रहा है, मैं मोहिनीदेवी के परिवार से सन् ३० से जब ये लोग वृन्दावन में शरणापन्न हुए–परिचित हूँ, हमारे "चार सम्प्रदाय आश्रम" के एक सन्त श्री रामकृष्ण दासजी भक्तमाली आपके घर जयपुर जाया करते थे–जहां श्री मोहिनीदेवी के पति ठाकुर श्री शंकरसिंह जी गीजगढ़ के प्रसिद्ध हरि भक्त ठाकुर श्री कुशल-सिंहजी की रियासत में मैनेजर थे। परम भक्त वैष्णव जनानु-रागी श्री शंकरसिंह जी की पत्नी मोहिनीदेवी ने ही प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की है, आपके जामाता राम भक्त ठा० गजराजसिंहजी आई. ए. एस. जो बड़े अफसर हैं और दिल्ली में उच्च पद पर बड़ी योग्यता से कार्य कर रहे हैं इनके बड़े दौहित्र कुं० कृष्णवीर सिंहजी इंजनीयर हैं तथा अन्य दौहित्र भी उच्च पदों पर हैं। इनके दूसरे जामाता सूर्यप्रताप सिंहजी बुलन्दशहर में योग्य जेलर हैं, जो श्री रामहरिदास जी शास्त्री के शिष्य हैं। इनके धेवते कुं० सत्यवीर सिंह एम. वी.वी-वी.एस हैं। इन्होंने अपनी नानी मोहिनीदेवी की कुल पुस्तकें छापने का वचन दिया है उनका उत्साह सराहनीय है।

रामनवमी
संवत् २०२४
दि० १७-४-६७

रामदास शास्त्री.
चार सम्प्रदाय आश्रम
वृन्दावन.

भूमिका नं० २

विश्वेश की अनुकम्पा से समय २ पर विशेषात्माऐं धरातल पर अवतरित होती रहती हैं, उन्हीं में से एक योगेश्वरी श्री मोहनी देवी जी हैं, जिन्होंने श्री राघवेन्द्र प्रभु और श्री वृजेन्द्रनन्दन की महिमा अपने अनुभूतों और अनुभवों द्वारा गाई है।

उनकी कविता और लेखों में अनुभव का आभास मिलता है, काव्य और पिंगल की दृष्टि से न विचार कर यदि हम आदि अन्त ग्रन्थ पढ़ जाते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि आत्मा की ध्वनि गुञ्जायमान हो रही है, मैंने यह ग्रन्थ अन्त तक पढ़ा है, कहीं कहीं तो रोमांच हो जाता है।

चित्रकूट का अनुभव, ब्रज भूमि की महिमा 'विरह का वर्णन बड़ी आतुरता से वर्णन किया गया है, मैं इस ग्रन्थ का समुचित आदर करता हूँ और पाठकों से अनुरोध करता हूँ कि श्रद्धा से पढ़ने पर इस ग्रन्थ का रसास्वादन हृदय स्पर्शी होगा।

रामभक्त कपीन्द्र जी

रामायण विद्यापीठ, १२२, सुन्दर नगर, नई दिल्ली

अनन्त श्री विभूषित श्री बाबा कृपासिन्धु दास जी महाराज

वृन्दावन का

★ शुभाशीर्वाद ★

भक्तिमति श्री मोहिनी देवी हमारे यहाँ की कृपा पात्र सेविका थीं, इनके दोहों पदों व अनुभवों को सुनने से यह प्रतीत होता है कि ये पूर्वकाल में युगल सरकार की परिचारिका रही होंगी, पुराने स्नेह के कारण इनको युगल सरकार का विरह बहुत सताता था और सरकार की तरफ से भी आश्वासन

मिलता रहता था कि कुछ भगवत् सम्बन्धी कार्य अथवा ब्रजरस का विस्तार कर लेने पर तुम को शीघ्र बुलालेंगे ।

इनको स्वप्नावस्था व जाग्रत अवस्था में युगल सरकार के तथा सखियों व सिद्ध पुरुषों के दर्शन होते थे । और कभी २ वार्त्ता का भी सौभाग्य प्राप्त होता था जैसा कि इन्होंने अपनी प्रार्थना में कहा है—

क्षण पल हू युग सम कटत, तड़फति आठो याम ।
आय खबरि मेरी करहु, हे प्रभु पूरण काम ॥
दीन बन्धु करुणायतन, सहजहिं दीन सनेह ।
मो दुखिया की सुधि लीजिये, समुझि पुरानो नेह ॥

सरकार की तरफ से कैसा सुन्दर आश्वासन मिलता है, जिसके मिलने पर थोड़े दिन पश्चात् ही यह गोलोक वासिनी हो गई ।

कछुक दिनन को कष्ट है, जो कर्म्मन के लेख ।
रहोगी परिकर बीच में, भोगहु भोग विशेष ॥

※ श्री गौर ※

प्राक्कथन

श्री मोहिनीदेवी जी के जन्म संवत् का ठीक-ठीक पता नहीं है वह यह कहा करतीं थीं कि उनका जन्म संवत् १९५६ में हुआ था, जिस हिसाब से उनकी आयु मृत्यु समय में करीब ६७ वर्ष की थी उनके गोलोक प्रयाण की तिथि श्रावण शुक्ला ७ संवत् २०२३ है, किन्तु कुछ जानकार लोगों का कहना है कि उनकी आयु अंत समय में करीब ७० वर्ष की थी।

उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र उनकी पुस्तिका 'मोहिनी कविता कुञ्ज' में छप चुका है, जिससे प्रकट होता है कि इनका जन्म धन सम्पन्न घराने में हुआ था और लालन पालन भी बड़े वात्सल्य के साथ हुआ था तथा विवाह भी धनाढ्य घर में हुआ था, इनके ससुर ठा० खंजनसिंह जी लक्ष्मी जी के बड़े कृपा पात्र थे और अनन्य राम भक्त थे जिनको स्वप्न में श्रीराम जी के दर्शन हुआ करते थे।

श्वसुर-गृह में आते ही वह रोग और कलह से पीड़ित रहने लगीं कलह इतनी अधिक बढ़ी कि इनके देवर ने सन् ४२ में इनका सब कुछ छीन लिया, जिसका इन्होंने बड़े लाड़-चाव से पालन किया था वही शत्रु बन गया, क्योंकि इनके पति का

मुख्तार ग्राम भी वही था। एक तो यह पुत्र शोक तथा छोटी पुत्री के वियोग से संतप्त थीं, अवधन हीन हो जाने से इनको बड़ी निराशा हुई और सब कुछ त्याग कर चित्रकूट में पहुंच गईं वहां भगवान् श्रीराम जी के लीला स्थलों के दर्शन करती रहतीं और प्रभु के अनुराग में उनका गुणानुवाद करती रहती थीं।

एक दिन की बात है इन्होंने भोजन की कुछ तैयारी नहीं की और भूखी बैठी हुईं अपने जीवन से दुखी होकर भगवान् से फरियाद कर रहीं थीं। उसी समय का उनका एक दोहा है—

दोहा–केवल भरोसे आपु के, जीवन हैं घन श्याम।
हमरे तो अब कुछ नहिं, धन धरती और धाम ॥

और उसी समय रहीम के निम्नलिखित दोहे का भी बारम्बार स्मरण करती रहीं—

दोहा–चित्रकूट पर बसि रहे, रहिमन अवध नरेश।
जिहि पर विपदा पड़ति है, वह आवत यह देश ॥

इनकी आर्त पुकार भगवान् श्रीरामचन्द्र जी के कानों में पहुंच गई और तुरंत ही इनका दरवाजा एक सुन्दर बालक ने खोला और उ.के हाथ में एक सेर पेड़ा देकर यह कहते हुए खिसक गया कि भोग लगा कर भोजन कर लेना इन्होंने यह समझ कर कि पेड़े श्री आचार्य्य जी ने अथवा उनके रिश्तेदार थानेदार जी ने भेजे होंगे रख लिये और भोग लगाकर क्षुधा की निवृत्ति की किंतु पूछने पर जब सब सज्जनों ने और अन्य पड़ोसियों ने पेड़ा भेजने से इंकार किया तब श्रीराम जी की महती कृपा का इनको अनुभव हुआ और इसका समर्थन श्रीराम जी ने स्वप्न में

कर दिया। श्री कामदगिरि की परिक्रमा में इनको भगवान् श्रीराम जी का साक्षात् दर्शन प्राप्त हुआ। कृतज्ञता प्रकाशक यह दोहे भी उन्होंने तुरंत उसी समय रचे थे।

दोहे–

चित्रकूट के घाट पै, पायो वहु विश्राम।
क्षुधा निवारण कारणे, पेड़े दे गये राम॥
असुरन लूटी सम्पदा, विकल भये सुरनाथ।
मों भूखी के कारणे, पेड़ा लाये रघुनाथ॥
मैं मूरख बैठी रही, कियो न उनको मान।
बिना परिचय के दिये, खिसकि गये भगवान॥
साकेत के पेड़ा हते, खाये खूब अघाय।
ये पेड़े फिर ना मिलें, रही राम गुण गाय॥

इस घटना के कतिपय मास बाद वह श्री अयोध्या जी होती हुई वृन्दावन चली आईं जहां अपने प्रणयदेव और इष्टदेव श्री राधारमण लालजी के दर्शन करके आनन्द में विभोर हो गईं। इनके हृदय में भक्ति भागीरथी की धारा बहने लगी और सर्वत्र मंद-मंद मुसकराते हुए श्री श्यामसुन्दर की छटा दीखने लगी, उनका मन माधवी कुञ्ज, कालिन्दी कूल, रास विहार, बंशीबट, सेवाकुञ्ज तथा कथा कीर्त्तन की ओर खिंचने लगा।

कृष्ण भक्ति के अमिट संस्कार इनके कोमल मन और अन्त:प्राणों पर जागृत होने लगे। इनके अंतरंग हृदय में भगवान् श्रीराधा-कृष्ण का प्रेम और आकर्षण बहुत बचपन से ही था। उन्होंने अपने प्राण देवता को रिझाने के लिये व्रज में या व्रज से बाहर कुछ उठा नहीं रखा, मिलन मुहूर्त्त की बाट

जोहती रहती थी और श्री राधारमण लालजी भी इनको स्वप्न में दर्शन दे जाया करते थे जैसा कि—

दोहे–

आजु शयन में मैं सखी, पहुंची वृन्दावन धाम।
करि दर्शन राधारमण, कियो कछुक विश्राम॥
कुञ्ज वीथिन में मैं फिरी, वहुत सखीन के संग।
मणि सों जटित भूमि वह, देखि भई मैं दंग॥
चक चौधीं अंखियां भईं, मन में बढ़्यो आनन्द।
तब नीके मैंने लखो, पूर्ण आनन्द कन्द॥
स्वर्ण सिंहासन बैठे युगल, सखियां ठाड़ी चहुं ओर।
सेवा में तल्लीन सब, नृत्य गान मचो वहु शोर॥
दर्शन करि मुदित अति, अद्भुत देखो रास।
एक मोहन और एक सखी, व्रज में करत विलास॥
सैन दे वातें करत, मो तन रहे निहार।
सोलह वर्ष की मैं भई, कियो सकल सिंगार॥
नख सिख सों सिंगार करि, बैठी प्रभू के पास।
हंसि मुसक्याय मम मन हरो, मेटी मन की प्यास॥
निज कोमल करन सों, चुंदरी उढ़ाई श्याम।
भाल तिलक वेंदी दई, मो मन भयो निष्काम॥
चोटी गूंदी प्रेम सों, दिये कर्ण फूल पहिराय।
प्यारी सों बोले पिया, नई सखी गई आय॥
तव प्यारी छाती लगी, वोली मृदु मुसक्याय।
मोहिनी अब धीरज धरहु, हम वेगिही लेहिं बुलाय॥

कछुक काम करि मृत्यु लोकमें, करि व्रजरस विस्तार।
इतनी क्यों घबड़ाहि तूं, मिलि हैं कुञ्ज विहार॥
ना दु:ख की परवाह करि, ना सुख में तूं फूल।
विश्वास राखि निश्चय यही, वसि है कालिन्दी कूल॥
क्यों रोवति है बावरी, अंसुआ ढ़रकत नयन।
मेरी सत्य सब बात हैं, सुनु मेरे मधुरे वयन॥
ऐसे स्वप्न की उमंग में, काहू ने दियो जगाय।
दिल्ली में अपने को निरखि, गई बहुत घबड़ाय॥
मणि बिनु पन्नग विकल ज्यों, जल विहीन ज्यों मीन।
ऐसी ही भई मेरी दशा, युगल दर्श विहीन॥

ऐसे स्वप्न इनको सैकड़ों बार हुए हैं और सखियों तथा सिद्ध महात्माओं के दर्शन और उनसे स्वप्न में वार्त्तालाप के भी अनेक अवसर प्राप्त हुए थे, जिनमें से मीराबाई का मधुर मिलन बहुत ही हृदयंगम और आकर्षक है जिसको लिखकर और कतिपय अन्य अनुभवों को लिखकर यह कथन समाप्त किया जावेगा। यदि इनके स्वप्न लिखे जावें तो ग्रन्थ का बहुत बड़ा विस्तार हो जावेगा।

कल्हि एक सखी आई निकट,पहिने राजस्थानी पोशाक।
कर में सितार बजावती, देखि रूप मैं भई अवाक॥
ग्राम मेड़तो उन कहो, और मेवाड़ में वास।
बड़ी प्रीति करि परस्पर, पूछन लगी कुशलात॥
वहु प्रसाद लाई संग में, मोहिं खवायो निज हाथ।
अरी सखी मैं निशि दिना, तेरो न छोड़ूं साथ॥
आती जाती मैं रहूं, प्यारी तेरे पास।
मैं तोसे सांची कहूं, हरि पूजहिंगे तेरी आस॥
मैं हूं अति विह्वल भई, फंसी नेह के पंथ।
नाम उनको भूलि गई, सो जानहिं कमला कंत॥

जीवन के अनेक आघातों व दारुण विपदाओं को सहने से कवित्री जी उत्पीडित हो उठीं थी ऐसी अवस्था में श्रीकृष्ण प्रेम ही उनका एक सहारा था जो पुत्र और धन का काम देता था। यह भक्तिमती देवी श्री युगल सरकार की आज्ञाओं का पालन करके अर्थात् भक्ति ग्रन्थों की रचना करके किन्तु अपनी आकांक्षाओं की पूर्त्ति किये बिना ही इस असार संसार से श्रावण शुक्ला ७ सं० २०२३ तदनुसार २२ अगस्त ६६ को चार बजे तुलसी निर्व्वाण महोत्सव के अवसर पर विदा हो गईं। दूरस्थित इनकी बहिन ने देखा कि एक सोने का विमान आया है और एक स्वजन ने देखा कि श्रीकृष्ण स्वयं नाविक बनकर इनको एक बड़ी नदी के पार कर रहे हैं इन्होंने लिखा भी है कि—

या संसार समुद्र से, होवै बेड़ा पार।
हरि चरणन की नावको, निरखहु बारम्बार॥

इनके पदों में श्रीकृष्ण दर्शन के लिये जो छटपटाहट, तड़पन, प्रणय और प्यास व विकलता भरी हुई है वह अन्य आधुनिक कवियों में नहीं पाई जाती। इनकी वाणी में भगवत् प्रेम भगवदालम्बन व श्रद्धा विश्वास शरणागति भक्ति आदि अनेक भाव भरे हुए हैं। श्री स्वामी रामहरिदास जी शास्त्री इनकी कविताओं को जगत कल्याण कारिणी कहा करते थे और इनके दौहित्रों से जल्दी छपा देने की आशा रखते थे जिस आशा को उनके सुयोग्य जामाता व दौहित्र शीघ्रातिशीघ्र पूरी करेंगे, देवी जी तो भगवदाज्ञा का पालन करती हुई और अन्त समय के पद व दोहे बनाकर प्रयाण कर गयीं।

❀ पद ❀

अरे मन उन चरणन में लौ लाय।
जिन चरणन सों निकसि सुरसरी गङ्गा नाम कहाय॥

तारण तरण हरन भव भय जिनकी स्तुति रहे सुर गाथ।
जे चरण कमला चापति, ब्रज वनितन लिये उर लाय॥
जे चरण केवट ने धोये, शिवजी रहे ध्यान लगाय।
जिन चरणन की नाव में, बहुत भये भव सागर पार॥
तेही चरण मोहिनो याचति, राधारमण सों विनवहि बारंबार॥

दोहे—सब बल हारो सांवरे, एक तेरो ही बल नाथ।
जीवन नैया पार लगाइयो, मेरो न छांडहु साथ॥
फिरि विनवहुं मैं सांवरे, काटि देहु भव जाल।
त्राहि त्राहि शरणहि पड़ीं, अन्त समय के काल॥

इन्होंने साफ लिख दिया है कि मेरे बनाये हुए यह ग्रन्थ नहीं है।

लीला धारी प्रभू, हिय में बैठत आय।
वह लिखावैं सो लिखूं, मैं नहिं लिखूं बनाय॥
पीताम्बर ओढ़े प्रभू, लिखवावत हैं आप।
मेरे तो बुद्धि सुधि नही, मैं कहती हूँ साफ॥

ऐसे ही श्री चैतन्य चरितामृत के रचयिता कविराज श्री कृष्णदास जी ने लिखा है कि वृद्धावस्था के कारण मेरा हाथ कांपता है और भी अनेक कष्ट हैं किन्तु श्री गौरांग महाप्रभू स्वयं लिखा रहे हैं। इन्होंने अनेकों ग्रन्थ लिखित छोड़े हैं जो निम्नलिखित हैं।

(१) कृष्णायन एक विशाल ग्रन्थ है जिसमें भगवान श्रीकृष्ण की अनेकों लीलायें हैं।

(२) शुकदूत
(३) हंसदूत
(४) गौराङ्ग चरित्र व अनेकों अवतारों के संक्षिप्त चरित्र

तारण तरण हरन भव भय जिनकी स्तुति रहे सुर गाध।
जे चरण कमला चापति, ब्रज वनितन लिये उर लाय॥
जे चरण केवट ने धोये, शिवजी रहे ध्यान लगाय।
जिन चरणन की नाव में, बहुत भये भव सागर पार॥
तेही चरण मोहिनो याचति, राधारमण सों विनवहि बारंबार॥

दोहे—सब बल हारो सांवरे, एक तेरो ही बल नाथ।
जीवन नैया पार लगाइयो, मेरो न छांडहु साथ॥
फिरि विनवहुं मैं सांवरे, काटि देहु भव जाल।
त्राहि त्राहि शरणहि पड़ीं, अन्त समय के काल॥

इन्होंने साफ लिख दिया है कि मेरे बनाये हुए यह ग्रन्थ नहीं है।

लीला धारी प्रभू, हिय में बैठत आय।
वह लिखावै सो लिखूं, मैं नहिं लिखूं बनाय॥
पीताम्बर ओढ़े प्रभू, लिखवावत हैं आप।
मेरे तो बुद्धि सुधि नही, मैं कहती हूँ साफ॥

ऐसे ही श्री चैतन्य चरितामृत के रचयिता कविराज श्री कृष्णदास जी ने लिखा है कि वृद्धावस्था के कारण मेरा हाथ कांपता है और भी अनेक कष्ट हैं किन्तु श्री गौरांग महाप्रभू स्वयं लिखा रहे हैं। इन्होंने अनेकों ग्रन्थ लिखित छोड़े हैं जो निम्नलिखित हैं।

(१) कृष्णायन एक विशाल ग्रन्थ है जिसमें भगवान श्रीकृष्ण को अनेकों लीलायें हैं।

(२) शुकदूत

(३) हंसदूत

(४) गौराङ्ग चरित्र व अनेकों अवतारों के संक्षिप्त चरित्र

(५) वृज महिमा
(६) वृन्दावन वास उत्कण्ठा
(७) नारद चरित्र, कुमार चरित्र
(८) पदावली व दोहावली
(९) अनेक भक्तों के चरित्र
(१०) स्वप्नों के अनुभव आदि

इनकी अन्तिम आकांक्षा यह रही है—

मेरी वपु की पांच तत्व, कृपा लेहु अपनाय ।
आकाश तत्त्व आपके, शिर छत्र बन जाय ॥
अग्नि तत्त्व जो वपु बसै, करहु रसोई सरकार ।
जल तत्त्व से पग धाेवो, मेरा होवै बेड़ा पार ॥
पृथ्वी तत्त्व को दाजो, कुञ्ज बिछाय ।
कबहुँक श्यामा श्याम के, पांव पड़ेंगे आय ॥
वायु तत्त्व की बनै बीजना, अली ढुलावै जाहि ।
राधारमण अब दर्श द, छवि में लहु छकाहि ॥

इनके अगाध साहित्य सागर में अनेक रत्न भरे पड़े हैं, जिनका सम्पादन और प्रकाशन एक कठिन समस्या है। कहीं कहीं कुछ दोहे ऐसे भी मिलते है जिनसे इन को साक्षात् दर्शन का भी पता चलता है जैसे—

जब से हरि मैंने लखे, बैठे कदम्ब की डारि ।
मोर मुकट कटि काछिनी, एक टक रही निहारि ॥
पीताम्बर ओढ़े प्रभू हृदय मांहि भृगुलात के चिह्न ।
रसिकन के मन भावते, दुष्ट रहत हैं खिन्न ॥
जब हरि ऐसे मैं लखे, भक्त वत्सल भगवान ।
तब सों सुधि भूली भवन, रहो नहि कुछ ज्ञान ॥

बावरी बनि वन वन ढूँढती, कहूँ मिलहिं घनश्याम।
जब निरखूँ मैं श्याम घन, तब पाऊँ विश्राम॥
इन नयनन रंगो युगल रंग, रही न और कूँ ठौर।
तब से मैं वौरी भई, सब जग लागत धूर॥
जन्म धरे को लाभ यह, तव दर्शन नन्दलाल।
कहा करूँ यह देह को, चिकनी चुपड़ी खाल॥
दर्शन पाती नित्य मैं, तबहूँ न तृप्ति जाय।
दिन दूनी निशि चौगुनी, दर्शन करूँ अघाय॥

स्वप्न में अथवा जाग्रत अवस्था में अथवा हृदय में श्री राधारमण के दर्शन न होने पर इनकी दशा बहुत शोचनीय हो जातीं थी जैसे—

दो०–निघटत नीर ज्यों मीन गति, ज्यों मणि बिनु व्याकुल व्याल।
ऐसी गति मेरी भई, तुम बिनु प्यारे नन्दलाल॥
तिरछी चितवनि रस भरी, और प्यारी मुसक्यान।
इन नयनन कब हेरिहौं, सुनि हौं वंशी तान॥
प्रेम छकी मोहन फिरूँ, मोहिं छायो उन्माद।
लोग कहत मोहिं बावरी, तासो बढ़त विषाद॥
अटक भटक सब मिट गई, दर्शन दीन्हों श्याम।
आठ याम चौंसठ घड़ी, मोहिं मिलो विश्राम॥
गौर श्याम छवि लखि लई, और न काहू को ठौर।
हृदय पलट पर हरि नचत, वंशी ध्वनि घनघोर॥

परमहंस चूड़ामणि अनन्त श्री विभूषित पंडित बाबा रामकृष्णदास जी महाराज भी इनको स्वप्न में दर्शन व उपदेश दिया करते थे।

दोहा–आजु रयन के समय, श्री बाबा भये कृपाल।
सिर पर फेरो हाथ निज, करिके कृपा विशाल॥

मोकूं यह आज्ञा दई, चलि वृन्दावन देश।
यहाँ रहिबो तेरो कठिन, सुख नहिं है लवलेश॥
अरी बावरी व्रज में, खा साग पात को तोड़।
जा में सुख उपजहिं घनो, आवहि प्रेम हिलोड़॥
लघुता धरि व्रज में वसो, तिनका से हू नीच।
भजहु सो श्यामा श्याम को, वृन्दावन के बीच॥
व्रज वीथिन डोलहु मगन, रटहु जो श्यामा श्याम।
अन्य बात बोलहु मती, करहु भजन निष्काम॥
उदर अग्नि को शान्ति कर, सूखे टुकड़ा खाय।
आ गिरिवर की गुफा में, भजन करहु मन लाय॥
प्रभू को साक्षात्कार हो, कछू न राखो संग।
एक लगन भगवान की, गहरो चढ़ावो रंग॥

योग क्षेप कारिणी व्रजेश्वरी श्री राधारानी ने स्वप्न में मोहिनी देवी को यह आशीर्वाद दिया था।

दोहा–मेरी ही प्रेरणा से, कोई देवहिगो तोहि दाम।
ताके नित प्रति धन बढ़ै, पूर्ण सुमंगल काम॥

यह आशीर्वाद श्री जी का पूर्णतया सत्य हुआ और इनके जामाता और दौहित्र की आमदनी नित्य प्रति बढ़ती ही गई।

श्री मोहिनी जी वैधव्यावस्था के दुःख से बहुत घबड़ाती थीं और संतों व पंडितों से सुहागिन बनी रहने का आर्शीवाद मांगा करती थीं तब–

दोहा–गौर हरि एक बेंदी दई, अपने नाम की छाप।
शची नन्दन की कृपातें, मिटै सकल संताप॥
काम दमन त्रिपुरारि ने, ले गिरिजा को साथ।
बहुत कृपा मो पै करी, फेरो सिर पै हाथ॥

ऐसे आर्शीवादात्मक संकेतों से इनको पूर्ण विश्वास हो गया कि मुझको विधवा नहीं होना पड़ेगा।

श्री मोहिनी जी के अनेक अनुभव हैं अनेक पद हैं अनेक दोहे हैं जो क्रमशः अन्य ग्रन्थों के साथ प्रकाशित होते रहेंगे।

निम्नलिखित दोहों से इनका भगवत् साक्षात्कार होना सिद्ध है।

दोहा—नीके हरि मैंने लखे, तन मन सुधि गई भूल।
नीलाम्बरा राधेलली, हरि पहिरे पीत दुकूल॥
बलिहारी या रूप की, किमि मैं करूँ बखान।
को प्रतीति मेरी करहि, जिन न लखे भगवान॥
सजल नील घन श्यामजू, श्यामा दामिनी की उनिहार।
कोउ अँखियन न निहारि सकै, चकचौंधी परम अपार॥
विरलो ही कोउ निहारि हैं, जाको शक्ति देय भगवान।
मोकूँ तो शक्ति दई, हरि पूर्वली प्रीति पहिचान॥

दोहा—हरि मैंने लख लिये, व्रजवीथिन के बीच।
चक चौंधी अँखियाँ भई, मैंने लीन्हीं मींच॥
बहु प्रकाश सहि जातना, ऐसो अनुपम तेज।
आप बिहरहिं व्रजविपिनमें, मोकूँ दीन्हों दिल्ली भेज॥
कोई पूर्व सुकृति ऐसी बड़ी, मन भरि लखो रसराज।
अब तो तुम्हरे दर्श हित, रोवति हौं व्रजराज॥

श्री मोहिनी जी ने अपने अंत की भविष्यवाणी भी सम्बत् २०२१ में लिख रखी थी यथा—

दोहा—हरि इच्छा ऐसी प्रबल, दिल्ली में होयगो मेरो अंत।
अंत समय प्रभु लव लगे, गाव मांगलीक सब संत॥

श्री भक्ति मती जी ने अपने अमूल्य ग्रन्थों की रचना करिके जो वैष्णव समाज का विशेष कर गौड़ेश्वर सम्प्रदाय का जो उपकार किया है उसके लिये भक्त समाज उनका चिरकाल ऋणी रहेगा, इनके ग्रन्थ साक्षात् भगवत् वाणी हैं जैसे चैतन्यचरितामृत में लिखा है:—

दोहा—मनुष्ये रचिते नारे, एते ग्रन्थ धन्य।
वृंदावन दास मुखे वक्ता, श्री चैतन्य ॥

ऐसे ही इनके ग्रंथों को भी श्री गोविन्द जी ने ही लिखाया है यथा—

दोहा—मोहिं तो हरि की प्रेरणा, वे स्वयं जतावत ज्ञान।
बैठे उर लिखवावत वे ही, मोहन चतुर सुजान ॥
सोवत जागत वे हरि, देत रहत आदेश।
लिखहु मोहिनी चरित यह, प्रेम कथा विशेष ॥

इनके ग्रंथों का प्रकाशन शनैः शनैः श्रीगुरुगौराङ्ग की पुनीत कृपा से होता रहेगा।

शिवराजपाल सिंह बी. ए.
रसमई जिला (मथुरा)

* जय गौर *

* श्री राधारमणो जयति *

श्रीराधारमण-पदावलि

नमो श्री वृन्दावन मन भावन ।
नमो श्री रवि तनया वंशीवट सेवा कुञ्ज सुहावन ॥
नमो नमो निधिवन बारहवन और चौबीस उपवन ।
नमो नमो राधाकुण्ड श्याम कुण्ड गिरि गोवर्धन ॥
नमो नमो रावल बरसानो नन्दगांव प्रेम बरसावन ।
ब्रज चौरासी कोस की लीला स्थलन कूं करूं वन्दन ॥
करूं सबकी वन्दना जे सब हरि भक्ति परायण ।
मोहिनी को प्रेम रस देहु करूं श्याम गुण गायन ॥

दो०—श्री गुरु पद रज शीश धरि, गिरा गणेश मनाय ।
राधारमण पदावलि, लिखती हूं मन लाय ॥
जग मङ्गल कर्त्ता गौर हरि, नित्यानन्द दयाल ।
अद्वैत परिकर सहित, मो पर होहु कृपाल ॥
छः गोस्वामिन बन्दि कर, बन्दौं वैष्णव समाज ।
मो पर कृपा दृष्टि करि, साधहु मेरे काज ॥

जिनकी भुज आजानुलम्बित, अंग उज्जवल अरु कमनीय
उन गौर और निताई को, सुमिरों धरि निज हीय ॥
नयन जिनके कमल सदृश, कीर्त्तन को करत प्रचार।
युग धर्म्म पालन कर्त्ता, विश्व के भरन पोषण हार॥
राधारमण जगतपति, और सब सखी समाज।
सबके पद बन्दन करूं, सँभारहु मेरे काज॥
वेद गावत विविध विधि, चिदानन्द रस मूर्ति विलास।
प्रेम भक्ति से प्राप्त जो, भक्तन हिय करत निवास॥
सब भक्तन पद वंदिके, राधा को हिय धार।
स्वप्न आज्ञा पालन करूं, करूं व्रजरस को विस्तार॥
मेरे तो कुछ बुद्धि नहिं, नहिं विद्या को भास।
वे ही लिखावहिं सो लिखूँ, हरि पूजहिं मेरी आस॥

(१)

खबरि लीजो राधारमण हमारी।
हारि थकी सब बल थक्यो आई शरण तिहारी॥
कब की हेरति बाट सांवरे अति ही दीन दुखारी।
हेरति हेरति बहुत देर भई आये नहिं बनवारी॥
आय मिलो मोहन तुम, काहे खबरि बिसारी।
भई दिवानी मोहनी प्रेम में, ब्रज में फिरै अनारी॥

(२)

राधारमण मेरि ओर निहारो।
कमती जल में मीन दुःखी तिमि मोकूं आय संभारो।
कल नहिं तव दर्श बिनु, दिन दिन परत दुःख भारो॥

क्षण पल छांड़ि जाहु मति मोहन, मोकूं मति बिसारो।
मोहिनी बिकल फिरहि घर आंगन आरत तोहिं पुकारो॥

(३)

राधारमण मैं तुमकूं रोय सुनाऊं।
मेरे घर नहिं सम्पत्ति कैसे काकूं भाऊं॥
दीना नाथ को द्वार छांडि अब कहाँ २ मैं जाऊं।
दुष्कर्म किये मैं निशिवासर सन्मुख होत लजाऊं॥
सफल करहु अब कारज मेरो काकहि श्याम रिझाऊं।
माधव गुण कोऊ नहिं मेरे रोय रोय तोहि बुलाऊं॥
मोहिनी के श्याम सनेही चरण कमल लपटाऊं।

(४)

राधारमण रही मैं आरत टेरि।
भक्त अनेकन तुमने तारे, कृपा करहु अब मेरी बेरि॥
दुःखी मोहिनी टेरि रही है, अब न लगावहु देरि।
बिगड़े काम सहज बनि जावैं, नेकु नजरिया फेरि॥
मोहिनी के श्याम सनेही, करिहहिं कृपा घनेरि।

(५)

राधारमण हेरो मेरी ओर।
तुम समर्थ की शरण पड़ी हूं कौन की करूं निहोर।
दीन मीन सी व्याकुल, रहि रहि उठै प्रेम हिलोर॥
नयन विहीन कैसे दर्शन करिहों ऐ मेरे चितचोर।
हो सब लायक तुम्हें पुकारूं नित संध्या और भोर॥
राधारमण बाधा हरहु मोपै करहु कृपा की कोर।
अहो प्यारे मोहिनी के लिये क्यों लीन्हें हाथ सकोर॥

(६)

आवहु राधारमण व्रजराज ।
नयन विहीन श्रवण हू फूटे तुम को मेरी लाज ।
सब विधि निर्बल भई मुरारी जाऊं कहां मैं भाज ॥
अति आरत हरि टेरि रही हूँ होन न देहु अकाज ।
श्याम मोहिनी तेरी कहाई सब लोकन में तेरो राज ।

(७)

राधारमण हेरहु मम लाज गई है ।
चलत न वश कुछ मेरो चहुं दिशि हेरि रही हुं ।
न मां बाप बन्धु सुत कोई तेरी राह मैं देखि रही हूं ॥
गेह देह की सुधि है नाहीं दीन दुखी मैं टेरि रही हूं ।
श्याम सनेही बाधा हरहु, तेरी शरण मैं आय पड़ी हूं ॥

(८)

राधारमण राखहु लाज हमारी,
जैसे लाज रखी पांचाली, होन न दीन उघारी ।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, छांड़ी गरुड़ सवारी ॥
लई खबर व्रजवासिनि की, नख पर गिरवरधारी ।
भक्त-भक्त सब तुम ने तारे, अब मोहिनी की बारी ॥
सहस्र कान सुनहु नंद नँदन लेहु मोहिं वेगि उबारी ।

(९)

जो मोहिं राधारमण में रति होती, ।
जन्म जन्म के मिटत पराभव पाप ताप सब खोती ॥

(५)

करती प्रेम नन्द नन्दन सों, सुख की नींद में सोती।
लोक और परलोक में नाहिन जाति विगोती॥
हृदय पलट पर श्याम बैठते जग मग होती जोती।
निशि वासर ध्यान श्याम को उन्हीं के प्रेम में रोती॥
भरि भरि नयन असुअन जल श्याम चरणों को धोती।
जन्म सुफल हो जातो मेरो जो मैं श्याम प्रेम में खोती।
करहु कृपा मेरे श्याम सनेही, मोहनी की मानि मनौती॥

(१०)

राधारमण शरण लई तेरी।
जब जब भीर पड़ी भक्तन पै नेक न लाये देरी॥
पांडव उबार लाखा भवन से जामें ज्वाल घनेरी।
लाज बचाई द्रुपद सुता की शालन कीन्हीं ढेरी॥
भक्त नरसीको भात पहिरायो वाघर पहुंचतकरी न देरी।
नामा जी को छप्पर छायो, धना की लाये गैइयां घेरी।
अब तुम कहां जाय छिपे प्रभु लई असुरन मैं घेरी॥
आय छुड़ावो मोहन प्यारे रही करुणा कर टेरी।
भक्त जनन की लई खबरिया मोहिनी की दशा न हेरी॥

(११)

छवि देखी राधारमण की।
मोर मुकट पीताम्बर सोहत, कुंडल की छवि लटकी।
मुरली अधर धरैं छवि न्यारी, निरखी छवि चितवन की॥

मन्द हंसनि जादू कौ टोना पीक ललित पानन की ॥
मोहिनी ठाढ़ी दरश करत है अपलक श्याम छटा की।

(१२)

अनुपम महिमा राधारमणकी उनके मैं गुण गान करूँगी।
जबहिं साँवलो ब्रजरजमें धावै तब मैं चरण धूलि बनूँगी ॥
अलौकिकशोभा श्यामश्यामा की मैं सुन्दर शृंगार रचूँगी।
प्रिया प्रीतमके चरण कमलमें मधुकर बनि गुञ्जार करूँगी ॥
मोहिनी सखी श्याम की दासी, प्रसाद पाय निर्वाह करूँगी ॥

(१३)

राधारमण बिनु कैसे कटें दिन रैन।
बांके छैल मधुर मुसक्यावन रतनारे हैं नयन।
बैठि कदम पर मुरली बजावत करत नयन की सयन ॥
पहिले तो हरि प्रीति करी, अब क्यों लागे दुःख दैन।
वृन्दावन छांड़ि मधुपुरी धाये कुबरी सौति के ऐन ॥
आठो याम विरह दुःख मन में बिसरि गये सुख चैन।
मोहिनी श्याम दरश की प्यासी, निरखत मग दिन रैन ॥

(१४)

गोरस को तो नाम भुलायो।
लेहु कोई गोपालहिं गली गली में शोर मचायो ॥
कोउ कहै श्याम, कोऊ कहै कान्हा आजु दरश हम पायो।
जाको सुधि बुद्धि कछु आवै लेहु दही कछु बचन सुनायो ॥

एक कहै दान मांगत हरि मोकूं बहुत सतायो।
तरुणी कृष्ण रंग में माती मोहिनी श्याम महारस पायो॥

(१५)

किते गयो मोहन घनश्याम।
मथुरा ढूंढ़ि वृन्दावन ढूंढ़ि गोकुल ह्वै गई शाम।
काहू न बतायो श्याम सलोनों भोजन भये हराम॥
कहाँ छिपो है छांड़ि हमें अब सुन्दर रूप ललाम।
वाही रूप पै भई दिवानी छांड़ि दिये सब काम॥
आर्त्त स्वर में पुकार रही, अइयो मेरे धाम।
मोहिनी विकल तुम्हें बुलावै मेरे मन के राम॥

(१६)

मोहन जादू डारि गयौरी।
चेटक मंत्र यंत्र कछु टोना, हिये प्रेम रस उमंगि रह्यौरी॥
रोम रोम बसी सांवरी सूरति रोम रोम रंग छाय रह्यौरी।
रूप लावण्य के प्यासे लोचन विकल रहत नित नेह नयौरी॥
क्षण क्षण निरखत हियो अति आतुर नेह नीर दृग में छयौरी।
श्री ब्रजेश प्रेम रंग रसिया, मोहिनी रस सार गह्यौरी॥

(१७)

मैं तो श्याम चरण में पगी अब जग में नाहिँ नचूँगी।
जबहिँ सांवलो वेणु बजावैं मधुर तान भरूँगी॥
नयन मेरे दर्शन करि अटके सुमिरत सुरति वचन सुखदाई।
रसना और नाहिं कछु भासति श्याम श्यामा की रटनि लगाई॥

चित चंचल संग ही संग डोलत लोक लाज मर्याद मिटाई ।
मोहन ने हरि लियो मेरो मन मोहिनी की अब कहा बसाई॥

(१८)

मन मचलो श्याम सों जाय जुटा ।
साँवरी सुरति ने मन हरि लीन्हों मोहिं न सुहावै अटारी अटा।
देह गेह की सुधि कछु नाहीं प्रेमहिं प्रेम जुटा ॥
सखी सहेली करत अचकरी ननदि बोलति वचन कटा ।
घर में पति मोकूं त्रासत नैना बरसहिं सावन घटा ॥
देह गेह की भूलि गई सुधि रोम २ में श्याम डटा ।
ऐसी आई मोहिनी गूजरी व्रजमोहन सों प्रेम जुटा ॥

(१९)

पलक ओट जनि होवें कन्हाई ।
घर गुरु जन बहुतहिं विधि त्रासत,
लाज करावत लाज न आई ॥
नयन रहे हरि दर्शन अटके,
श्रवण छके सुनि वचन सुहाई ।
रसना और कछु ना बोलति,
श्याम श्याम की रटन लगाई ॥
चित्त चंचल संग हरि के डोलत,
लोक लाज मर्याद मिटाई ।
मन हरि लियो मोहिनी को,
तन बपुरे की कहा बसाई ॥

(२०)

हे हरि कबलों ब्रज से न्यारी रहिहौं ।

विरह व्यथा तन जरजर कीन्हों,

नित केतिक अन्तर दुःख सहिहौं ॥

राज महल की करूँ खवासी,

चाकरी में चूक न दैहौं।

चूक परै परि हरहिँ न कबहूं,

लाड़िली के चरण कमल गहिहौं ॥

श्यामा श्याम विहार रास रस,

आस्वादन करि नेत्र सुफल बनैहौं।

मोहिनी यमुना पुलिन निकुञ्ज,

द्वार पै अपनी कुटी छवैहौं ॥

(२१)

वृन्दाविपिन अमिय रस मधुप मन मेरो ।

यहां वृन्दावन कदम्ब छांह तर, करि हौं जाय वसेरो ॥

दोउन को निरखत नयन सिहात, मेरो होत निवेरो।

वृन्दावन अमिय रस पी पी, नित्य करौं गुजारो ॥

नित नव रास केलि निकुञ्ज में, होत न जहां सांझ सवेरो।

मोहिनी के प्रभू नटवर नागर, आय विपत्ति निवेरो ॥

(२२)

राधारमण भक्त वत्सल तुम सांचे हो।

भीलनी के बेर खाये गौतम नारी तारे हो ॥

द्रुपद सुता को चीर बढ़ायो, भक्तों की लज्जा राखे हो।
व्रज में रास कियो कुञ्जन में, गोप त्रियन संग नाचे हो॥
बालक पन में दधि फैलायो, माता हाथ बंधाये हो।
कुबेर सुत नल कूबर को, जड़ योनि छुटाये हो॥
व्रज रज महिमा अधिक बढ़ाई, मुख ब्रह्मांड दिखाये हो।
प्रेमी गोप तियन के तुम, लूटि लूटि दधि खाये हो॥
प्रेम विवश तुम व्रज बनितन के, चीर चुराये हो।
वृषभानु सुता वश ह्वै कै, विनती बहुत सुनाये हो॥
विश्वम्भर प्रभु नाम कहायो, सो ग्वालन के कौर अघाये हो।
मोहिनी पतित की ख़बरि लेहु. तुम दीनबन्धु कहलाये हो॥

(२३)

करु मन नंद नन्दन सों प्रीति।
जन्म मरण के साथी वे ही, यह जग सदैव रहे विप्रीत॥
मन रण में चौकस रहो, लेवहु इंद्रिन जीति।
चरण सरोज में प्रीति निरंतर, मेटि देहैं भव भीति॥

(२४)

अरे मन उन चरणन सों लौ लाय।
जिन चरणन सों निकसि सुरसरी, गङ्गा नाम कहाय॥
तारण तरण हरन भव भय, जिनकी स्तुति रहे सुर गाय।
ते ही चरण कमला चापति, व्रज बनितन लये उर लाय॥
वे ही चरण केवट ने धोये, शिव जी रहे ध्यान लगाय।
सो ही चरण मोहिनी माँगति, रही चरण में लौ लाय॥

(२५)

मन कौतुकी श्याम चरण से जाय जुटा ।

मन हरि लीन्हों राधारमण ने, मोहिं न सुहावै महल अटा ॥
मैं दधि बेंचन गई वृन्दावन, बीच में आय श्याम डटा ।
नयन सयन दे बांकी चितवनि, प्रेमी से प्रेम आय लटा ॥
अपने रस वस करि मोहन, बोलहिं वचन अट पटा ।
देह गेह की सुधि बिसराई, विखरि गई मेरी केस जटा ॥
भौरी भई श्याम प्रेम में, कुञ्जन श्यामहिं श्याम रटा ।
नयन रोय रोय ऐसे वरसैं, जैसे वरसैं सावन भादों घटा ॥
मोहिनी के तुम श्याम सनेही, मिलि के मति जावहु हटा ।
चरण शरण में पड़ी तिहारी, करहु कृपा की नेकु छटा ॥

(२६)

बधाई वाजी गोकुल में ।

रानी यशोदा लाला जायो, आनंद छायो त्रिभुवन में ॥
मंगल कलश धरो दरवाजे, चौक पुरो आंगन में ।
दधि दुर्व्वा गो रोचन रोरी, आरती सजी थारन में ॥
नारद शिव सनकादिक, विचरि रहे गोकुल नगरी मे ।
होत बधाई नंद पौरि पै, और सब व्रज गांवन में ॥
याचक भीर भई दरवाजे, दधि कांधो मची गलियन में ।
पुष्पन वृष्टि होत गोकुल में, देखैं देव विमानन में ॥
मथुरा कन्हैया जन्म लियो है, वधाई वाजी गोकुल में ।
दर्शन लालसा भरी मोहिनी, मग्न फिरै व्रज वीथिन में ॥

(२७)

गोविन्द तोकूँ कौन यतन से पाऊँ ।
हृदय में बनाऊँ प्रेम का मन्दिर, वाही में झूला झुलाऊँ ॥
भोग आरती पुष्पन पूजा, भाँति भाँति के लाड़ लड़ाऊँ ।
वाणी में शक्ति न मेरे, कैसे तव गुण गाऊँ ॥
निशिवासर में तो बिन तड़फूँ, और का कहि तोहि रिझाऊँ ।
मोहन मोहिनी का जग कर्त्ता,
यही समझि फूली अंग न समाऊँ ॥

(२८)

हे दुःख दमन दुःख मिटाओ ।
अपनो विरद कुछ और बढ़ाओ ॥
मो मति मंद को हाथ गहि लीजो ।
व्रज वल्लभ मोहिं दर्शन दीजो ॥
बड़ी अभिलाष रहत मन में है ।
प्राणनाथ मम आर्त्त सुने है ॥
जन की सुधि स्वयं प्रभू लीजे ।
ऐसी प्रभू दयालुता कीजै ॥
जो अनुरागी की ना सुधि लेही ।
सो न कहावत नाथ सनेही ॥
अब उर चाह बहुत बढ़ी है ।
युगल दर्श की आश लगी है ॥

अब जनि करहु आना कानी मोसों।
अपनी सब व्यथा सुनाई तोसों॥
हे व्रजराज दासी को अपनाओ।
प्रेम सुधा रस मोहिं चखाओ॥
दर्श दिखावहु इन तृषित नयनन।
आवहु मोहन मेरे फूटे ऐनन॥
व्रज वीथिन कुञ्जन वन कानन।
एहो कब मोहिं दर्श दिखावन॥
आनन्दमय प्रभु रूप दिखैयो।
भुज गहि मोहिं खूब समुझैयो॥
प्रेम सरिता में हमें डुबावहु।
तृषित चकोर को सुधा चखावहु॥
दर्शन दे अपने रूप लुभावहु।
मो पतितन को पावन बनावहु॥
मो अनाथ के नाथ गुसाईं।
कृपा करहु गुरुदेव के नाईं॥
अहो नाथ विनती यह मोरी।
मोहिं संभारहु बात अति थोरी॥
तुम छवि निरखत मति भई भोरी।
कैसे पाऊँ तव चरण किशोरी॥

पराधीन मैं अति दुःख पाऊं।
दुस्सह ताप में जलि जलि जाऊं॥
पाप भरी मैं कैसे तोकूं भाऊं।
हाय सांवरे तव नाम लजाऊं॥
अपनो विरद विसरि मति जैयो।
वेगिहि मो अधम को अपनैयो॥
हम सेवक तव कृपा भरोसे।
रहत निडर दास बहु मोसे॥
हम युगल दासन के दासा।
फिरैं जगत में मन यही हुलासी॥

दोहा—

बसैं मुकट मुरली लिये, जिनके उर नन्दलाल।
तिन्हहि जीत कोऊ ना सकै, उन्हें डरपैं यम काल॥

(२६)

आजु अवध नगर में आनन्द बधाई।
रानी कौशिल्या लाला ज्यायो, सर्वनिधि अयोध्या में आई॥
सिंह पौरि पै नौवत घुरी है, फूलन अयोध्या छाई।
वन्दीजन रघुकुल यश गावैं, नारद रहे वेणु बजाई॥
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, सब ही दर्शन को जाई।
होति बधाई दशरथ पौरि पै, दशरथ द्रव्य लुटाई॥

ढ़ाढ़ी ढ़ाढ़िन नाचि रही है, पंडित लग्न धराई।
अति छबि छाई राज द्वार पै, मोहिनी ललचि दर्शको आई॥

(३०)

भज राधे श्याम युगल चरणा।
इत भूतल पाप बढ़े, देवन स्तुति करना॥
अभय किये देव सब, पृथ्वी पर जन्महि लेना।
सजल घन सम श्याम मनोहर,
लाड़िली रूप तड़ित लजना॥
इत रावल में बजति बधाई,
बरसाने में नौबत बजना।
इत मथुरा में जन्म लियो है,
गोकुल में प्रकटन होना॥
नन्द महरि घर बजति बधाई,
उत व्योम सों सुर पुष्प झरना।
इत कीर्त्ति लाड़ लड़ावैं,
उत में यशोदा झुलावै पलना॥
इत प्यारी सखियन संग खेलैं,
उत लालन सखन संग रहिना।
इत नन्दगांव उत बरसानो,
मध्य थल संकेतहि पर मिलना॥

इत नीलाम्बर तन साड़ी,
उत पीताम्बर तनु धरना ।
सोलह शृङ्गार करति हैं राधे,
उत मोर मुकट मुरली अधर रखना ॥
इत में रसिकिनी वृषभानु दुलारी,
उत में चतुर शिरोमणि नन्द नन्दना ।
ऊंचे गांव में व्याह रचायो,
पीरी पोखर खुलो कंकना ॥
जो राधे को जन्म न होतो,
नाहिं न कृष्ण जन्म होना ।
वलि वलि जाऊं युगल रूप पै,
आतुर मोहिनी गहे चरणा ॥

(३१)

जहां देखो हरि हाजिर पावैं,
भक्तन को लाड़ लड़ावैं ।
नाभा जी को छप्पर छायो,
धना की गाय चुगावैं ॥
चीर सम्हारत पंचाली घर,
लाखा भवन से पंडु बचावैं ।
गज की खबरि सुनी उठि धाये,
जटायु की जटा सुलझावैं ॥

(१७)

मीराबाई और सदन कसाई की सहाय करि,
कबीर की लदन लदावैं।
भात भरो श्री नरसी को,
समधी को बहुत शर्म्मावैं॥
रंका वंका जयमल चतुर्भुज,
इन सबको लाड़ लड़ावैं।
झूंठे बेर शबरी के खाये,
विदुर घर छिलका चबावैं॥
कहां तक लिखूं भक्त बहु तेरे,
सब घर आनन्द ढ़ोल बजावैं।
तरुवर पात गिनौ तो गिन लेवहु,
भक्त की कोऊ पार न पावैं।
जय जयकार भक्त भगवत की,
मोहिनी सबको शीस नवावै॥

(३२)

अरे मन वृथा जन्म गंवायो।
वालापन में ज्ञान भयो न, खेलहि खेल मचायो॥
ज्वानी में ऐंठि चलत है, महा मोह है छायो।
वृद्धापन ने घेरि लियो पुनि, रोगन आय सतायो॥
इन्द्री जवाब देति हैं सबरी, यम को नोटिस आयो।
वैद्यकी औषधि काम करहि न, निशिवासर तड़फि बितायो॥

गर्भवास में कौल किये, सो सब ही बिसरायो।
अजहूं मोहिनी रही अचेत, राधारमण नहिं गायो॥

(३३)

करहु मन वा दिन की तदबीर।
जा दिन लै चल लै चल ह्वै हैं, कोऊ न बंधावै धीर॥
परम हितैषी संग चलैगो, श्री दाऊ जी को वीर।
भजन करहु श्रीयुगल श्यामको, मोहिनी मति होउ अधीर॥

(३४)

अरे बावरे मनुआं क्यों चाटत जग धूरि।
परम दयालु खड़ो सब लेकर, नहिं तोसूं कछु दूरि॥
कल्पवृक्ष सम वृन्दाविपिन छांड़ै मति, हरि पकड़ैंगे बांह।
क्यों इतनो भटकहि जगत में, बैठि आक ढांक की छांह॥
गोरी भोगी वृषभानुजा, करि कृपा जो लेहिं बसाय।
बिनु कृपा श्री लाड़िली के, वृन्दावन सहज न कोउ पाय॥
तेरी दासी मोहनी, भटकति देश विदेश।
क्यों न कृपा करती लली, पावति बहुत क्लेश॥
नाम रिजस्टर में लिखो, चाकरी में चूक न देहु।
इतनो करहु रासेश्वरी, जानि हमारो भेहु॥

(३५)

मैं हरि तेरे रंग रँगी,
जब से रंगी श्याम रंग, नहिं रही काहू की सगी।
त्रिविधि ईर्षणा गाढ़ी छूटी, अब ममता हू नाहिं रही॥

ज्ञान कपाट खुले हरि मेरे, पूर्ण भक्ति जगी।
हरि माया प्रेरित जग सबही, को मैं बुरी लगी॥
मनमोहन ने मोहिं लियो अब, उन्हीं के चरण पगी।
जब से जन्म लियो या जग में, मोहिनी बहुत ठगी॥

(३६)

राधारमण छवि चित्त चढ़ी।
नख-नख व्यापो रंग सांवरो, हृदय पलट पर बैठो अड़ी॥
रोम-रोम में बसी युगल छवि, अंखियन प्रीति भरी।
चरण सरोज में नेह अति बाढ़ो, दर्श अभिलाषा रहति खड़ी॥
प्रेम ताग करि गोंथी मेरी, सुन्दर झुक्तन केरि लड़ी।
आय संभारी मनमोहन ने, मोहिनी तीनों पन की बिगड़ी॥

(३७)

कब लोगे खबरिया हमारी।
बालापन हंसि खेल गंवायो, हरि की सुरति बिसारी॥
युवा में मोह मद छायो नहिं, कीन्हीं खबरिया बिहारी।
वृद्धापन में कठिन पड़ो है इन्द्री शिथिल भई जब सारी॥
यम ने चोटी कर गहि लीन्हीं, पड़ी है विपत्ति भारी।
सब संभरै मोहिनी की जबहिं, कृपा करैं गिरधारी॥

(३८)

मन तो हरि संग मथुरा ही गयो।
जब सों गयो बहुरि न आयो, रहि गोपाल गह्यो॥

कहा करै तन पर्यो है व्रज में, छार हू नाहिं भयो।
एक मन हतो गयो श्याम संग, अब कुछ नाहिं रह्यो ॥
मोहिनी दीन व्रज में ठाड़ी, उद्धव से संदेशो कह्यो।
आवहु श्याम दर्श मोहिं देवहु, इतने से सब काज सर्यो ॥

(३९)

भक्त वत्सल नन्द-नन्दन भयहारी।
नख पर धर गिरि व्रजहिं बचायो, नाम पर्यो गिरिधारी ॥
नल कूबर हित आपु बंधायो, बोलो दामोदर जयकारी।
जो कोऊ दामोदर नाम जपतु है, छूटै बन्धन भय भारी ॥
व्रज में ग्वालन की झूंठी खाई, ग्वालिन गुल्चा मारी।
चोरि चोरि के माखन खायो, ऐसो प्रेम पुजारी ॥
पूतना घोर दूध विष लाई, दीन्ही गति महतारी।
मोहिनी बैठी चरण शरण में, करहु न ताहि न्यारी ॥

(४०)

हमारे प्रभु लेहु खबरिया जन की।
तुम प्रभु दीनानाथ कहाये, कौन सुनै मो निर्धन की ॥
मेरे पाप समुद्र हैं गति बिगड़ी मेरे जीवन की।
तुम ही दर्शन देहु सांवले, हो जावै मेरे मन की ॥
घट-घट वासी अन्तर्यामी, तू जानै मेरे चित की।
और कोई मेरी बात न बूझै, मैं फिरती हूं भटकी ॥
श्याम विरह की विषम ज्वाल है, देह जाति है भभकी।
मोहिनी की छुटावहु नन्द दुलारे, फांसी यम दूतन की ॥

(४१)

पायो री मैंने श्याम रतन धन पायो।
रतन सिंहासन पै आय विराजौ, घंटा शंख बजाऊँ॥
करिके सेवा सकल तुम्हारी, महा प्रसादी पाऊँ।
सकल सिंगार आपको करिकै, झूठो पान चबाऊँ॥
तुम ही मेरे सगे कुटुम्बी, तुम्हरे ही गुण गाऊँ।
मोहिनी पड़ी सदा शरण में, निरखि निरखि सुख पाऊँ॥

(४२)

देखहु री सलौनी छवि मोहन की।
श्री वृन्दावन की कुञ्ज गलिन में,
वंशी बजति है प्यारे की॥
लूटत गोरस मगन होत हैं,
मटुकी फोरत है गोपिन की।
श्री वृषभानु किशोरी अरु,
नन्द लाला शोभा बढ़ावत व्रजवन की॥
अंखियां तरसति हैं दोउन की,
छबीली छवि देखन की।
मोहिनी को आस युगल की,
और न काहू से अटकी॥

(४३)

कब मिलिहो मोहन प्यारे।
जब जब भीर पड़ी भक्तन पै, आवत बहुत सकारे॥

मेरी वेर देर क्यों केशव, केतिक देउं पुकारे।
पहिली साख भरूं संतन की, बिगड़े काम सुधारे॥
गज अरु गीध अज़ामिल से, ज़ानि पड़ी सबके किये निस्तारे।
मेरे पाप में कमी नहीं है, पाप किये बड़े भारे॥
प्रेम प्रीति से मो कहँ मोहन, मिलियो भुजा पसारे।
मोहिनी की लेऊ खबरिया, हे व्रज मंडल वारे॥

(४४)

मोहि आनि उबारहु श्याम सनेही मैं महा विपत्ति ने घेरी।
निशि दिन मैं तेरे ध्यान में रहति हूँ अरु फिरूं मतवारी॥
दुःख घटा घन घोर उठी विजली तडफति है घनवारी।
मोहिनी पर अब दया दिखाओ बहुत भई लाचारी॥

(४५)

लगाई बड़ी देर हे केशव।
प्रेम प्रीति से मो कहं केशव जल्दी ही अपनाव॥
जैसे दूध मिलै पानी में एक ही रूप दिखाव।
जैसे तरंग मिलै जल निधि में जैसा मेरे नम भाव॥
जैसे रवि से किरण अलग नहिं तैसा मेरा चाव।
तोहि देखि तेरी पूजा करलूँ दूरि होय मन मुटाव॥
प्रेम के पुष्प प्रीति की माला अब तोहिं पहिनाव।
मोहिनी दासी डगमग डोलै लागो हिये में घाव॥

(४६)

हरि चरणन सों निकसि गंगा शङ्कर जटा समाई।
उन चरणनको वेध्यो व्याधने ताहि दियो स्वर्ग पहुंचाई॥
जिन चरणनन की चरण पादुका भरत रहे उर लाई।
धना जना और केवट को रहो जगमें सुयश छाई॥
धन्य नाव अरु धन्य कठोता धन्य केवट की चतुराई।
प्रेम सहित चरणोदक लेकर फिरि हँसि नाव चलाई॥
तेही चरण हनुमत उर धरि लीन्हीं बहुत बड़ाई।
इन चरणन को परसि गौतम धरणी दिव्य रूप बन जाई॥
ये ही चरण परसे मीराबाई ने तुम्हारे लोक सिधाई।
मोहिनी की अर्जी मंजूर करहु देवहु चरण दिखाई॥

(४७)

ऐसो नटवर नन्दकिशोर चलती डगर रोकी ग्वालिनकी।
तूं तो है छैला नन्दको लाला खबर करहु मेरे पापन की॥
टेढ़े पाप और टेढ़ा कदम्ब है टेढ़ी लहरि तेरी यमुना की।
टेढ़े आप और टेढ़ी बंसुरिया टेढ़ी गली है वृन्दावन की॥
टेढ़ी गति तेरी टेढ़ी लीला टेढ़े नयन लीलाधारी के।
टेढ़े विटप और टेढ़ी लतायें टेढ़े वदन सब कुब्जा के॥
सूधी मोहिनी शरण में आई ताहि न बिसारहु ललानंद के॥

(४८)

अब प्रकटो दयानिधि हेरत टेरत देर भई है।
सब के दुःख हरे श्याम तुम मेरी वेर क्यों देरकरी है॥

(२४)

पंचाली को बुयला सभा में दुःश्शासन ने लाज लई है।
खींचत २ गजबल था क्यों चीर की महिमा बहुत बढ़ी है॥
जापै नन्दलाल दयालु भये तुम उनकी सब बात बनी है।
अब दया करहु तुम मोपै मैंने सब सही अनसही सही है॥
सब भक्तन के दुःख हरे प्रह्लाद ध्रुव की बनाय दई है।
मोहिनी हेरत वाट मोहन की नयनों से जलधार बही है॥

(४९)

ऐसी चहिये वृषभानु दुलारी।
अपने जनन को लेहु शरण में सब अपराध विसारी॥
पाप अमित गिनहु ना शरणागत तुम हो भय हारी।
मेरे पाप बहुत हैं बाढ़े चित्रगुप्तहु की मति मारी॥
अब तुम शरण लेहु मोकूँ मैं हूँ पाप ताप आगारी।
अजामिल सरीखे अनेक पापी तारे अब मोहिनी की वारी॥

(५०)

हमारे मन बसहु युगल सरकार।
झूंठी दीखै जग की माया झूंठो सकल पसार॥
सांचो नेह राधारमण से वाको करहु दुलार।
सच्चे हितैषी तुम ही दोउ मेरे प्राण अधार॥
मोहिनी के मन में वसि जावो श्रीजी सहित नन्दकुमार।
बाट निहारत देर भई है दर्शन दे जैयो एक बार॥

(५१)

नटवर मोहन श्याम हमारे ।
वंशी लिये पीताम्बर काछे मोहन मोर मुकुट वारे ॥
प्यारी संग सजे मनमोहन त्रिभंगी छवि तनु कारे ।
मम उर बसहु सदा सर्वदा मोहन प्राण प्यारे ॥
इन दर्शन को योगी याचत न होवहु नयन से न्यारे ।
आप विराजहु मन मन्दिर में पीत वसन के ओढ़न वारे ॥
बसहु सर्वदा दासी के घर और भक्तन के करहु निस्तारे ।
मोहिनी बैठी बाट निहारहि बेगि खबरि लेहु ब्रज वारे ॥

(५२)

युगल रूप सुधा रस बोरी ।
निरखत रूप दिवानी भई ऐसी जैसे चन्द चकोरी ।
दीन हीन गति ह्वै गई तन की तुम जानत हो मोरी ।
हेरत बाट थकित भई है कब मिलि हैं सुन्दर जोरी ॥
आवन आश लगी रही अब राधे श्याम जिवावैं वर जोरी ।
पतित मोहिनी आर्त्त पुकारै रावल गोकुल की पौरी ॥

(५३)

हँसि कहत प्रिया सों नागर अपने मन की ।
कहत श्याम सुनो राधे यह बानि अनोखी मेरे जीवन की ॥
न मोहिं चिंता विश्व पालन की न ऐश्वर्य बढ़न की ।
चिंता मोहिं यही एक व्यापै रक्षा करूँ प्रेमी भक्तन की ॥

अब जब भक्त मोहि बुलावैं तब खबरि रहै न तन की।
न मैं बसूं वैकुंठ पुरी में न मोहिं खबरि गोकुल की ॥
मैं तो बसूं सदा भक्त घर गली गही यह प्रेम की।
भक्त हमारे मैं भक्तन को भामिनि सुनि लेहु चित्त की ॥
भक्तन के संग मैं डोलत हूँ चिंता मोहिं उनके योग क्षेम की।
मोहिनी सदा यही पुकारै जय जयकार भक्त भगवत की ॥

(५४)

नमो नमो विराट पुरुष रूप नारायण।

सनक सनन्दन सनातन सतकुमार बनि,
ब्रह्मचर्य्य पालन कीयो दया मय ॥
सूकर को अवतार लियो प्रभु,
पृथ्वी को लाये उठाय कृपामय।
नारद को अवतार प्रकट ह्वै,
भक्ति को कियो प्रचार दया मय ॥
नर नारायण को रूप प्रभु,
तपस्या को बल दिखायो दयाम।
कपिल रूप ह्वै प्रकटे जगत में,
सांख्य शास्त्र पढ़ायो कृपामय ॥
दत्तात्रेय अवतार लियो तुम,
ब्रह्म ज्ञान सिखायो दयामय।

यज्ञ अवतार धारण कियो,
स्वायंभुव रक्षा हेतु कृपामय ॥
ऋषभ देव अवतार धरि,
परमहंस मार्ग दिखायो दयामय ।
प्रथु को अवतार लियो हरि,
सर्व औषधी दोहीं कृपामय ॥
मत्स्य रूप प्रकटे प्रभूजी,
और कच्छप रूप धारो दयामय ।
धन्वन्तरि रूप बनाय के,
अमृत कलश लाये कृपामय ॥
मोहिनी रूप प्रकट ह्वै,
देवन अमृत प्यायो दयामय ।
नर हरि रूप प्रकट करि,
लीन्हों प्रह्लादहि उबारि कृपामय ॥
दिति पुत्र वामन ह्वै करि,
बलि से मांग्यो दान दयामय ।
परशुराम अवतार धरि,
क्षत्रियन को कियो विनाश कृपामय ॥
व्यास रूप लियो हरि ने,
वेदों की शाखायें फैलाई दयामय ।
जगत विदित अवतार राम को,
मर्यादा हुई बांधि कृपामय ॥

पुनि प्रकटे बलराम कृष्ण ह्वै,
पृथ्वी भार उतारो दयामय।
बुद्ध अवतार धारण करि,
कियो दैत्यन को मोहन कृपामय ॥
गौर हरि जन्मे नदिया में,
कियो संकीर्त्तन प्रचार दयामय।
कलियुग के अन्त काल में,
होंगे कल्कि अवतार कृपामय ॥
प्रातः पाठ करहिं प्रेम सों,
ताहि न होवै कोई कष्ट दयामय।
श्री कृष्ण भक्त सनेही,
मोहिनी को अपनावो कृपामय ॥

(५५)

जय जय परब्रह्म अविनाशी,
जय जय तुम्हरी लीला जगत प्रकाशी।
जय जय भूतल भार उतारन,
प्रकट होत संतन दुःख टारन ॥
जय जय चौबीस वपुधारी,
तव यश प्रकट संतन हितकारी।
जय जय वाराह कच्छप मत्स्य अवतारी,
जय जय वामन परशुराम नारद ब्रह्मचारी ॥

जय जय प्रथु राम कृष्ण असुर संहारी,
जय जय नरसिंह प्रह्लाद रक्षा कारी।
जय गौर हयग्रीव मोहिनी कल्की,
जय नर नारायण कपिलदेव ज्ञानी॥
जय सनक सनन्दन सनातन सनतकुमार,
जय मनु ऋषभदेव परम उदार।
आरती करत खुशी मन मेरो,
बार बार देखूँ हरि मुख तेरो॥
जय जय वृन्दावन निजधाम,
जय जय गोकुल नन्द को गांव।
जय बरसानो जय गोवर्धन,
जय संकेत जय निधुवन॥
जय गोपिन यूथ संग नन्दलाल,
जय ग्वाल सखा बिहारी लाल।
जय अष्ट सखी सुख धाम,
जय चौंसठ सखी ललाम॥
जय यमुना जय बारहो वन,
जय मानसी गङ्गा चौबीस उपवन।
जय संध्या को समय सुहावन,
पांच पचीस मिलि आरति गावँव॥

युगल किशोर निरखि नयनन सों,
मोहिनी बलि बलि जाई ॥
तीन काल संध्या के मांहीं,
आरती करहिं पद यह गाई।
कलियुग केर दोष ना व्यापै,
पाप होय सो तुरत नसावै ॥
मन में वशी बस चाह यही,
प्रिय नाम तुम्हारा उचारा करूँ।
बिठला के तुम्हें मन मन्दिर में,
सुन्दर रूप निहारा करूँ ॥
भरिके दृगों में प्रेम का जल,
पद पंकज नाथ पखारा करूँ।
बनि प्रेम पुजारी तुम्हारा प्रभू,
नित आरती भव्य उतारा करूँ ॥

(५६)

व्रज बल्लभ घन श्याम प्यारो।
गोपी वल्लभ जीवन धन मेरे, नयनन को तारो ॥
निशि दिन तड़फूँ दर्श को,नन्द नन्दन यशोदाको प्यारो।
गली गली में मैं फिरि आई,मिल्यो न व्रज मंडल वारो ॥
रोम रोम में भरो प्रेम रस, व्रज नागर नन्द दुलारो।
दुःख भंजन नाम तिहारो, मेरी विपत्ति बिनाशन हारो ॥

विकल मोहिनी तुम्हें बुलावै, तेरो ही एक सहारो।
तुम से रीति प्रीति पुरानी, तुम ही करहु रखवारो ॥

(५७)

बनाये बनेंगी हमारी, बाँके पिया बनवारी।
बात बनाई व्रज बासिन की, उंगली पर गिरवर धारी ॥
मेरी बेर देर क्यों प्यारे, करती हूँ पुकार नित्य तिहारी।
मो दुःखिया को कोई नहिं संगी, तुम हूँ खबरि बिसारी ॥
पंचाली की लीन्ही खबरिया, पांडव सभा मंझारी।
दीन मोहिनी की करहु सुगतिया, अब क्यों करत अबारी ॥

(५८)

हमारे अब युगल नाम व्योहार।
नाम धाम और नाम खजाना, नाम बना टकसार ॥
नाम वस्त्र और नाम है गहिना, नाम गले का हार।
नाम ही सिर का ताज हमारा, झम्पा सितारे दार ॥
राधे श्याम मन्त्र गुरु ने बतायो, कियो जगत् उद्धार।
व्रज नागर मोहिनी के सनेही, बेगि करहु भव पार ॥

(५९)

जगत में कै हरि कै हरिदास।
इनके चरण सुधा से, मिट जावैं सब प्यास ॥
दर्श पर्श अघ नासैं, मिटि जावैं यम त्रास।
मनुआँ अब अनत मति भटकै, करि इन पै विश्वास ॥

भाग्य पूर्व ले उदय होहिं जब, वे आवहिं निज पास।
मोहिनी लोभिन इन चरणन की,मति मोहिं करहु निराश ॥

(६०)

व्रज रज छांड़ि अन्त नहिं जायँगे।
रूप नटवर नीको लागै, रूप चतुर्भुज हम न लुभायँगे ॥
स्वर्ग लोक हमें न भावै, व्रज मण्डल को सीस झुकायँगे।
मुक्ति हमें फीकी लागै,भक्ति महारानी को खूब रिझायँगे ॥
कल्पवृक्ष हमें न भावै, व्रज तमाल तरु आनन्द मनायँगे।
वहां न यमुना ना बंशीवट,ना श्याम गाय चरावन जायगे ॥
वहां न वत्स भाव नन्दजू को, ना यशोदा लाल कहायँगे।
वहां न रास रसैं वृजमोहन, ना व्रजबनितन लाड़ लड़ायँगे ॥
जावै बलाय हमारी स्वर्ग, हम व्रज में प्रेम चखायँगे।
नटवर राखहु टेक मोहिनी की, व्रज में प्राण गंवायँगे ॥

(६१)

मन भावै सोही करहु हाथ तुम्हारे लाज।
तन मन धन अर्पण कियो, तुम दोउन को व्रजराज ॥
उठत किशोरी बैठत किशोरी, किशोरी जीभ के द्वार।
जागत किशोरी सोवत किशोरी, किशोरी मेरो गल हार ॥
मरने के बाद आंखैं, खुली रहेंगी मेरी।
तरसती रहूंगी सूरत प्रभु, देख लूं तेरी ॥

बिना युगल प्यारे के, दर्श प्राण न निकलैं हाय।
ऐसी कृपा की जो युगल वर, दीजो चरण दिखाय ॥
मोहिनी को अंत सम नियरायो, करहु अब दोऊ सहाय ॥

(६२)

मिलि बिछुड़े मोहन प्यारे।
तब तो रास केलि कुञ्जन में, नाचत भुज गल डारे ॥
ठुमुकि ठुमुकि के नाचत मोहन, सुन्दर नूपुर झन्कारे।
बंशीवट लीला अति सुन्दर, गोपिन चीर हरत मतवारे ॥
सांवली सुरति पै गोपी रीझी, पीताम्बर ओढ़न हारे।
जब से जाय द्वारिका छाये.हम तो व्रजमोहन नाम पुकारे ॥
तुम बिनु कुञ्ज अनल सी लागैं, जरे जात सब गात हमारे।
मुख ऊपर अब छायी उदासी, हाड़ सूखि भये कारे ॥
तुम बिनु वेगि मरैंगी, दर्श देहु द्वारिका वारे।
राधारमण तुम्हारे बिना मोहिनी, पतित को कौन उबारे ॥

(६३)

मन वृन्दाविपिन बसि जाना।
वृन्दाविपिन की सघन लतन में,
युगल लाल यश गाना ॥
चित्त लगाय कै करो चाकरी,
गोपी वल्लभ लाल लड़ाना।

(३४)

जाहु मनुआ श्याम चरण में,
गति मति नहीं भुलाना ॥
तुमको प्यारी विषय वासना,
उनके कहे मति जाना ।
कर्यो दर्श बिहारी जी को,
गिरिवर की परिक्रमा करि आना ॥
रस बरसत है कुञ्ज कुञ्ज में,
मनुआ मन भरि के संग लाना ।
राधारमण मोहिनी के सनेही,
मोकूं पार लगाना ॥

(६४)

सब सुधरेगी व्रजराज सुधारेंगे ।
सबही बनेगी जब व्रजराज बनावेंगे ॥
जसी सुधारी द्रुपद सुता की, सभा में चीर बढ़ायो ।
जैसी बनायी गुरु अपने की, मृतक पुत्र कूँ लायो ॥
कैसी कृपा करी विभीषण पै, जरत शाला बचायो ।
तैसी ही कृपा जन नरसी पै, महिरो श्याम भरायो ॥
मीरा कबीरा कर्म्मा सूर की, सदना के बाट तुलायो ।
जैसी दयालुता व्रज बनितन पै, गलवैंया दे रास रचायो ॥
शिवरी कर्म्मा नारि अहिल्या, जटायु की जटा सुलझायो ।
रसिक जनन के श्याम सहायक, उनके नाम बिकायो ॥

भक्त उनके वे भक्तन के, शेष धनेश शारदा गायो।
मोहिनी कूर कुछ लायक नाहीं, राधारमण मन भायो॥

(६५)

हमारे अब चरणन लागी डोर।
जिन चरणन व्रज पावन कीन्हों,
करिके बंशी की घनघोर॥
जिन चरणन तारी नारि अहिल्या,
पावन नन्द किशोर।
राजन को मान घटायो जनक सभा में,
दीन्हीं धनुष टंकोर॥
व्रज वासिन हित गिरिवर धार्यो,
एक अंगुली की कोर।
व्रज बनितन हंसि रास रसायो,
रसिक जनन चित्त चोर॥
नदिया में संकीर्त्तन प्रचार्यो,
ढ़ोल मृदंग बजत चहुं ओर।
केवट को भव पार कियो,
मोहिनी को भये कठोर॥

(६६)

अब तो प्रेम लगो मोहन से।
गिरिधर मेरो मैं गिरिधर की, पड़ी प्रेम के फांसे॥

(३६)

नयनन नीर भीजि गई सारी आय लगावो हिया से।
सखी एक मेरी बिनती कोइ मिलावो वेगि मन मोहन से ॥
तृषित मेरे नयना चातक जिमि भये प्रेम प्यासे।
मोहन रसिक रसिकनी मोहिनी जीवति तेरी दया से ॥

(६७)

आली री मेरे नयनन ऐसी बान पड़ी।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी सूरति वही हृदय में आन अड़ी ॥
दोऊ नयना ऐसे बरसैं जैसे सावन भादों की झड़ी।
मोहिनी के राधारमण सनेही उन चरणन पर आनि पड़ी ॥

(६८)

मेरे नयनन मोहन दर्श की बानि पड़ी।
कब की ठाड़ी पंथ निहारू अपने भवन खड़ी ॥
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूर्त्ति उर बिच आनि अड़ी।
कहो सखी प्राण कैसे राखूं खोई जीवन की जड़ी ॥
गदगद बाणी कंठ रुकि आयो दोऊ नयनन से लगी झड़ी।
मोहिनी के राधारमण सनेही आवहु आवहु याही घड़ी ॥

(६९)

मोहिं एक अचरज बड़ो भारी।
हमारी सुधि क्यों न लेत विपत्ति विदारण बांके विहारी।
पापी पापी सबही तारे मोहिं केहि अपराध विसारी।
भई शाप से शिला अहिल्या पड़ी पड़ी देखति बाट तुम्हारी ॥

ताकी खबरि लई रघुनन्दन चरण रज शिर ऊपर डारी।
ग्राह से ग्रन्थि छुड़ाई गज की नेकु न करी अवारी ॥
नृग गणिका व्याध गीध और प्रेम पीड़ित ब्रज नारी।
तिन सबकी आशा पूजी तुम नेकु न करी अवारी ॥
एक बार सब मिलि बोलो भक्त अरु प्रभू की जयकारी।
मोहिनी पतित की बेर कहाँ सोये राधारमण गिरधारी ॥

(७०)

मोहन बिनु कौन से कहूँ दुःख रोय।
रोय २ किन्हैं दुःख सुनाऊं कासे राखूं गोय ॥
कौन कहूं सुनै को मेरी मन की कली गई खोय।
तुम से कहा छिपो मन मोहन क्यो रहे तुम भोय ॥
क्षण क्षण युग सम बीतत कहाँ रहे हरि सोय।
मोहिनी के राधारमण सनेही मेरे पाप ताप देवहु धोय॥

(७१)

इन्हीं पद की रज दो करतार।
जिन चरणों की ठुमुक चाल पै कौशिल्या बलिहार ॥
गदगद होवैं नन्द यशोदा जिन पद की झंकार।
जिन पद में नूपुर बांधे रास समय ब्रज की नारि ॥
गोप गोपिकन के मन मोहे जिन पद को निहारि।
पंचवटी गिरि चित्रकूट पै जिन पद कियो विहार ॥
चरण कमल जो काली के फण पै हुए सवार।
जिन चरणों की शोभा निरखतीं खड़ी जनकपुर नारि ॥

पार उतारे भक्त केवट ने जो पद कमल पखारि।
जो पद धोये रंग भूमि में जनक सहित परिवार ॥
जिन पद पंकज की रज से दी शिला अहिल्या तार।
जिन चरणों की सेवा करतीं सदा श्री वृषभानु दुलारि ॥
जिन चरणों को नित्य पूजत इन्द्र उमा त्रिपुरारि।
जे पद पंकज निशिदिन दाबैं लक्ष्मी प्राण अधार ॥
जिन चरणों की विमल पादुका पूजत भरत कुमार।
सो ही चरण रज मांगति मोहिनी दोऊ हाथ पसार ॥

(७२)

गुरूजी मेरो कर देहु सब सिंगार।
भक्ति की बेंदी ज्ञान की चूड़ी श्रद्धा की मांग सुधार ॥
कानन कुन्डल हरि चर्चा के निष्ठा को बनाय देहु हार।
कीर्त्तन नाद की पायल पहिनूं प्रीतम सुनहिं झंकार ॥
नयनन काजल दिव्य ज्योति को निरखूं ब्रजराज कुमार।
प्रेमा भक्ति की साड़ी नील रंग मोपै देवहु डार ॥
मिलाहि देहु युगल वर को मिट जावहि सकल विकार।
होयगो अहिसान तिहारो मोहिनी करती नमस्कार ॥

(७३)

जग भूलै भले ही कन्हैया तुम मति हमें भूल।
सदा विराजहु हृदय मंदिर में प्रेम भवन में झूल ॥
जग प्रपञ्च स्वप्न की माया विविध भांति के शूल।
प्रेम करहु वा नन्द नन्दन सो जग में डालहु धूल ॥

जन्म मरण को वही साथी जाको भजहु मन खोल।
मोहिनी के सिर ऊपर मनमोहन फहराते रहो पीत दुकूल॥

(७४)

वेद में ढूंढे ब्रह्मांड में ढूंढे चित चौगुने चायन।
लख्यो सुन्यो ना कबहुं कैसो हतो वह रूप सुभायन॥
ढूढ़त ढूढ़त ढूंढ़ फिरी कोऊ न बतायो लोग लुगायन।
लख्यो वहां कुञ्ज लतन में बैठो पलोटत राधिका पायन॥
आनंद कंद श्यामसुन्दर छवि मो नयनन में गई समायन।
मोहिनी मोहित राधारमण पै वाही के रूप लुभायन॥

(७५)

निभैयो अपनी बानि गिरिधारी।
पतित पावन भक्त उद्धारण मोहन संकट हारी॥
दर्श दिखाय काटहु संकट अब मति करहु अबारी।
हाय चुपकी क्यों साधी हमारी देखत ख्वारी॥
जो चाहो तो च्चण में मेटो छोटी विपत्ति हमारी॥
बड़े बड़े दुःख तुमने टारे भक्तन के हितकारी।
भक्त नहीं तो पतित सही पर लीन्हीं शरण तिहारी॥
पतित उद्धारण आवहु जल्दी संग में वृषभानु दुलारी।
मोहिनी के राधारमण सनेही कैसे सुरति बिसारी॥

(७६)

आजु फूलन जनक पुर छायो।
राजा जनक मग्न भये हर्ष न मन में समायो॥

रानी सुनयना लाली पायो सखियन मंगल गायो।
बंदनवारी बांधी द्वार पै मुतियन चौक पुरायो॥
प्रकट भई श्री जनक नन्दिनी त्रिभुवन में होत बधायो।
बन्दीजन गावत गुण वेद ध्वनि सब नगर भरायो॥
गली गली में मंगल गावैं अरग जन से नगर सिचायो।
मोहिनी निरखति जन्मोत्सव को आनन्द दर्शन पायो॥

(७७)

जनक नन्दनी गौरी जी को पूजि रही।
षोडश पूजा करी लली ने अंखिया मीचि रही॥
जन्म जन्म वर पाऊं रघुवर यह वर मांगि रही।
लता ओट से रघुवंश निहारे, आनंद मोद भरी॥
पूजो बहुरि गौरि को प्यारी, दर्शन कर लेहु यही घरी।
सकुचि सीय जब नयन उघारे, बैठी लाज भरी॥
धनुष की गरुता हरौ आजु दिन, करी तपस्या तोरी।
सुनि अति विनीत बचन सिया के, विहंसति बोली गौरी॥
जो मन याचहु मिलहिं सोई वर, गिरा सत्य होवै मोरी।
मोहिनी को दर्शन दीजो जानि के, मन्द बुद्धि अरु भोरी॥

(७८)

धन्य वृषभानु घर राधे जन्म लियो आई।
धन्य धन्य श्री कीर्ति माता, देवहु करत बड़ाई॥
कीर्ति रानी लाली जाई, त्रिभुवन में बजति बधाई।
रावल में भीर अति भारी, हरषित धावैं लोग लुगाई॥

दधि दुर्वा गोगेचन, रोरी मोतिन चौक पुराई।
सबै देव जुरि आये रावल, नारद वेणु बजाई॥
या पावन गांव की गलियन में, दधि कांदों की धूम मचाई।
मोहिनी हू पहुँची दर्श को, रहि चरनन मन लाई॥

(७९)

करहु कृपा वृषभानु किशोरी।
तेरे दर्श को तड़फति डोलूँ, जैसे चन्द्र चकोरी॥
नेक मिहरि करहु श्री राधे, नन्द नन्दन की जोरी।
पाप ताप सब मेटहु मेरे, मैं तो जनम की खोरी॥
दर्श दिखावहु श्याम युगल वर, तुम से लागी डोरी।
राधारमण तेरे दर्श को, मोहिनी ओटत झोरी॥

(८०)

आज की घड़ी शुभ आनन्द छाई।
रानी यशोमति लाला जायो, निरखि रूप मैं गई लुभाई॥
स्वर्ण कलश भरे धरे दरवाजे, मोतियन चौक पुराई।
बन्दन वार बँधे दरवाजे, मालिनि लेके माला आई॥
चारहु वेद भाट बनि आये, श्री नारद वेणु बजाई।
शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक, नभ में रहे फूल बरसाई॥
सिद्ध गन्धर्व दर्शन को आवैं, दधि कांदों की कीच मचाई।

(८१)

यशोदा ने कारी अंधरिया में जायो।
जासों कारो तन श्री हरि पायो॥

(८१)

कारो कारो मति कहो कोई, कारो जगत उज्यारो।
या कारे की छवि पै कोटिक, कामदेव छवि वारो॥
जब से छवि लखी या शिशु की, मेरो मन भयो मतवारो।
छैल छबीलो अति गरबीलो, मेरे प्राणन को प्यारो॥
परम रूप लावण्य निधि मोहन, सृष्टि सो है न्यारो।
करहु कृपा मोहिनी पै मोहन, पाप ताप संताप निवारो॥

(८२)

धन्य कोखि यशोदा जायो, तीनों गुण ते न्यारो।
धन्य यशोदा धन्य नन्दजू, धनि धनि गोकुल खेरो॥
धनि धनि गोप वंश सुखकारी, जहां जन्म हरि केरो।
भव भय हरण पाप विनाशन, सब जीवन को प्यारो॥
होत सोहिलो श्री नन्द घर में, उपजो तीन लोक रखवारो।
याचति मोहिनी तव दर्शन की, श्री राधारमण हमारो॥

(८३)

मन बीती ऊधो तुम्हहिं सुनाई।
रोम रमें नेह श्याम को, मन मन्दिर में बसत कन्हाई॥
प्रीति करी थी मोहन प्यारे सों, होती लोग हँसाई।
सो अब प्रीति छांड़ि नन्द नन्दन, कुबरि सवति अति भाई॥
आखिर जाति अहीर कहावत, कहां तक करौं बड़ाई।
कहा अब वह करैगी मो मन, रहत सदा उन पाई॥

हम देखैं सर्वत्र कृष्ण को, उन से नेह बहु नेह लगाई।
सर्वस्व एक तुम श्याम मोहिनी के, राखहु चरण लगाई ॥

(८४)

ऊधव जी उन श्याम सुन्दर से जाय कहो।
निरखौ दशा या व्रज की, विरह विषाद छयो ॥
नित नव विरह वेदना तन में, जियरा जाय दहो।
तप्त तैल कुञ्जन में बरसै, विषम दुःख ना जाय सहो ॥
प्रेम कहानी सुनावहु ऊधव, हम तो प्रेम को पंथ गह्यो।
कृपा करि दर्शन दीजो मोहिनी को, दुखहि दुःख सह्यो ॥

(८५)

वेगि ऊधव उन हरि को मिलैयो।
प्रेम पुजारिन हम सब गोपी, प्रेम को स्वादु चखैयो ॥
प्रेम को पंथ कठिन अति ऊधव, हमरो विरह सुनैयो।
जब से गये मथुरा नहिं लौटे, व्रज को नेह निभैयो ॥
हम सब गोपी विरह की मारी, हमें मति बिसरैयो।
करि अपराध क्षमा मोहिनी के, चरणन मांहि लुकैयो ॥

(८६)

ऊधव हरि से कहो, हम गोपिन मति बिसारो।
अंखियन में बसत जियरे में बसत,
हियरे में बसत वह प्यारो ॥

तन में बसै मन में बसै रसना में बसै,
अङ्ग अङ्ग में बसै नन्द दुलारो ।
सुधि में बसै बुधि में बसै,
नस नस में बसै यह व्रज वारो ॥
वन में बसै घर हू में बसै,
वंशीवट बसै कुञ्जन से होत न न्यारो ।
मोहिनी के राधारमण सनेही,
केवल एक आसरो तिहारो ॥

(८७)

विकल भई ऊधव मग जोऊँ ।
क्षण बाहर क्षण भीतर, जाऊं पल पल पंथ निहारूँ ।
कोऊ बटोही मिलै मथुरा को, वाको जाय निहोरूँ ॥
बतलावो कहूं देखे नन्दलला, तुम्हारे पगहिँ पलोटूँ ।
मोहिं श्याम सुजान मिलैयो, हा हा करि बलि बलि जाऊँ ॥
रहि रहि पीर उठति विरह की, राधारमण पुकारूँ ।
देह कपत तन सुधि बुद्धि भूली, अंसुअन से मुख धोयो ।
गोपीवल्लभ लाल हमारो, मोहिनी को काहे विगोयो ॥

(८८)

ऊधव जी मनमोहन से अटके नयना ।
हमरी विरह व्यथा तुम श्यामसुन्दर सों कहिना ॥

अंखियन नीर बहत है निशिदिन, लाल भये हैं नयना।
वृन्दावन में दुःखित फिरैं, हमारी सुधि फिरि लेना॥
अवाक वाणी तन सुधि नाहीं, रोम-रोममें बसै नंद को छोना।
कहो समुझाय श्याम सों, इन बातन में कछू सरै ना॥
श्री राधे अष्टसखी सङ्ग, वृन्दाविपिन में कुछ दुःख है ना।
विकल दर्श बिनु भई मोहिनी, ऊधव श्याम सुनै ना॥

(८९)

ऊधव जी कहां जाऊं कहां ढूढूँ श्याम।
मोहिनी छवि मेरे नयन समानी, और काहू से नहिं काम॥
सबही मिलि ढूंढ़ो वृन्दावन, ढूंढ़ि फिरी नन्दगांव।
तिल तिल मथुरा ढूंढ़ी बरसाने, में हो गई शाम॥
गिरि गोवर्धन भटकि फिरी मैं, चित्त में नहिं पायो विश्राम।
मोहिनी के राधारमण सनेही, भजन करूँ निष्काम॥

(९०)

ऊधव जी मोहिं तड़फति रैन विहानी।
जब से गये श्याम मथुरा को, क्षण क्षण में अकुलानी॥
गई न सङ्ग न प्राण पठाये, हरि आवेंगे हम जानी।
मेरी कठिन्न वज्र सी छाती, लोक में लाज नसानी॥
एक दिन रास विलास रचे कुञ्जन में, अहोभाग्य हम मानी।
परम सनेही नटवर नागर, मोहिनी तेरे हाथ बिकानी॥

(९१)

कौन को संदेशो भेजूँ हिय में बसै दधि चोर।
हिय में बसै जिय में बसै, नस नस में बसै नन्द किशोर॥
हृदय श्याम रङ्ग रङ्गो सखी री, नयन झड़ैं बड़े जोर।
कौन दूती को भेजूँ श्याम पै, कासे कहूं निहोर॥
प्रेम तार भेजूँ श्याम कूँ, जब आवैगो वह दौर।
उनकी मेरी प्रीति पुरानी, मन मंदिर में वंशी बजै घनघोर॥
प्रीतम को रूप चन्द्र सम सोहै, मो मन भयो चकोर।
मोहिनी राधारमण सनेही, हिय में बसै चित्त चोर॥

(९२)

नमो नमो एकादशी हरि प्यारी।
जो जन तेरो व्रत करैं, पावैं मुक्ति भक्ति फल चारी॥
हरि प्रसन्न होय वर पायो, आई जगत मंझारी।
जब से प्रकट भई या जग में, कर दई यमन की ख्वारी॥
दूत बतलावैं धर्मराज सों, अब हम देंगे फांसी डारी।
श्री एकादशी प्रताप सों, कोई न आवत नरक मंझारी॥
मोहिनी मूरख कछु जानै नाहीं, प्रभु चरणन धोवन हारी॥

(९३)

नन्द पौरि पर ठाढ़ी यशोदा माई।
अति आतुर ह्वै सुतहिं बुलावै, आवो कुंवर कन्हाई॥
माता रोहिणी करति रसोई, जींव लेहु दोऊ भाई।
बाल सखा सङ्ग में लावो, क्यों रहे देर लगाई॥

तातो भोजन सीरो हो गये, बोलि रहे नन्दराई।
मोहिनी को देहु प्रसादी, राखहु प्रेम सगाई॥

(६४)

मस्त महीना होरी को छवि बरणी न जाय।
युगल छबीले होरी खेलैं, रति पति रहे लजाय॥
अबीर गुलाल उड़त चहुँ दिशि, लाली रही गगन में छाय।
इत में गोप मंडली सब, उत में व्रज बनिता सब लई बुलाय॥
जुड़े परस्पर दोऊ दल में, ढ़ोल ढप रहे खूब बजाय।
यह होरी देखन को ब्रह्मादिक, रहे देव ललचाय॥
देव वधूटी बैठी विमान में, रहीं सुमन बरसाय।
मोहिनी मुदित फगुआ देखति, राधारमण पै रही लुभाय॥

(६५)

सतगुरु ने मोहिं करियो निहाल।
कंठी बांधि जिन नाम सुनायो, राधारमण गोपाल॥
युगल नाम को तिलक लगायो, कंठ में बांधी तुलसी माल।
पूजा संध्या की रीति बताई, ऐसे करियो तीनों काल॥
तिमिर दूरि कर ज्ञान बढ़ायो, घट दीपक दीयो बाल।
मोहिनी के राधारमण सनेही, सतगुरु करहिं संभाल॥

(६६)

श्री गुरु की चरण रज पाऊँ।
अति कृपाल वे गुरु हमारे, जिनकी पद रज शीश लगाऊँ॥

जिन दीन्हों नाम अमिय रस, जासे जीवन सुफल बनाऊँ ।
इतनी कृपा करहु गुरु मेरे, वर देहु वृन्दावन मैं पाऊँ ॥
जहां पर चित्त लगत है मेरो, मन्दिर हरि शीस झुकाऊँ ।
मोहिनी राधारमण सनेही, हरि गुरु पै बलि बलि जाऊँ ॥

(६७)

गुरु पैयां लागूं बांह गहो मेरी आय के ।
यह संसार अगम नदिया है, बहि रही लहराय के ॥
टूटी नांव न खेवन हारो, रही है चक्कर खाय के ।
काम क्रोध तूफान घनेरे, भंवर उठ घुमराय के ॥
मन मल्लाह अति ही बावरो, यह न जानैं चलाय के ।
कृपा दृष्टि करहु गुरु मेरे, इन सबसे लेहु बचाय के ॥
कृपा की बल्ली लगावहु गुरु जी, देखहु न जाय डुबाय के ।
मोहिनी के राधारमण सनेही, दीजो उनके दर्श कराय के ॥

(६८)

हमारे गुरु को गौर वाटिका धाम ।
भेष सहचरी राधारमण उपासी, युगल चरण विश्राम ॥
हरि गुरु की परम कृपा से, मोहिं मिलो श्री वृन्दावन धाम ।
राधारमण चरण में छकी, मोहिनी ना काहू से काम ॥

(६९)

हमारो अब दयालु गुरु सों हेत ।
तारण तरण हरन भव भय, राखहु चरण निकेत ॥

करी कृपा दयालु गुरु ने, मिलाये श्यामा श्याम समेत।
हरि रूप गुरुदेव हमारे, मोहिनी विसरावहि केहि हेत॥

(१००)

रोग शैय्या पर लेटी पंथ निहारूँ।
सुधि बुद्धि मोहि न रही रोग वश,
चौंकि परूँ तब तोहि पुकारूँ॥
आंठों याम चयन नहिं तन कूँ,
क्यों कर तोहि बिसारूँ।
निरमोही तुम सुधि न लीन्हीं,
रोग ग्रस्त नहिं होस सभारूँ॥
अंत समय की बेर लाड़िले,
सब कुछ तो पै वारूँ।
मोहिनी के राधारमण सनेही,
निशि दिन तुन्हें निहारूँ॥

(१०१)

रात लखो मैंने सुन्दर श्याम।
सखिन मध्य में आप बिराजत, श्री वृन्दावन धाम॥
जब सों लखी श्यामसुन्दर छवि, नहिं पायो विश्राम।
ऐसी कृपा करहु मोहिनी पै, भजन करूँ निष्काम॥

(१०२)

अब मैं लई गौर चरणन की ओट ।
काजी को जिन मान घटायो, कीर्तन करि डंकाकी चोट ॥
बौद्ध जैन और यवन सभी की, दूरि करी सब खोट ।
गजपति और भट्टाचार्य्य ने, लई जिन चरणन की ओट ॥
पद पंकज श्री गौर हरी के, जिनपै रही मोहिनी लोट ।

(१०३)

फाल्गुन पूर्णिमा को नदिया में बजति बधाई ।
आज गौर ने जन्म लियो है,
सम्मिलित विग्रह राधा कन्हाई ॥
सकल संकीर्त्तन करैं हरिको,
ग्रहण स्नान करन गंगा सबधाई ।
हरी बोल की ध्वनि चहुँ गूँजति,
राधे कृष्ण की शोरमचाई ॥
विश्वम्भर मानुष हो प्रकटे,
देवन दर्शन हित छांड़ी अमराई ।
चक्रवर्ती जन्म पत्र बनावैं,
यश गौराङ्ग तिहलोक में छाई ॥
छांड़ि मोहिनी अपने घरकूँ,
गौर चरण दर्शन कूँ धाई ।

(१०४)

गौर प्रभू तुमने खूब बनायो।
कीर्त्तन कियो प्रसार जगत में, पतितन के पाप नसायो॥
हिन्दु इसाई करहिं कीर्त्तन, मुल्लन ने शोर मचायो।
काजीने ततक्षण रोक लगाई,ताको सिंह ह्वै भय दिखलायो॥
तुर्कन दाढी जल गई, वैष्णवन मन मोद बढ़ायो।
मोहिनी ने हू कीर्त्तन करिके, प्रभू की चरण रज पायो॥

(१०५)

हे गौर चन्द्र तुम से मेरी यही पुकार।
अनाथ बन्धो करुणैक सिंधो, भव बंधन से देहु छुटकार॥
तव महिमा के नित गुण गाऊँ,करूँ भक्तन को नमस्कार।
जो कुछ कियो कहो सुनो सब, करहु क्षमा मेरे कर्त्तार॥
मन को हू पाप प्रभू दयामय,नाशहु भव भय भंजन हार।
मोहिनी पड़ी चरण में यांचै, प्रेमा भक्ति देहु गौरउदार॥

(१०६)

हरि मैं तो मोर मुकट पै वारी।
मोर मुकट कुण्डल छवि सोहे, वंशी धुनि है न्यारी॥
ले लकुटिया गाय चरावत, ओढ़ै कम्बल कारी।
तिरछे नयन मूंद मुसक्यावन, पीताम्बर छवि न्यारी॥

कौस्तुभ मणि बैजयंती माला, सुन्दर नूपुर की झंकारी।
सुन्दर मुखमें पान की लाली, लखि मन की सुध बिसारी॥
ग्वाल बाल संग धेनु चरावत, हंसत श्याम दे तारी।
कहं तक बरणूँ सुदरता कूँ, मोहिनी भई बलिहारी॥

(१०७)

प्रभू मो सों नाहिं बनी।
यह जीवन गयो वृथो ही, खोयो अमूल्य मणि की कणी॥
काम क्रोध में भई बावरी, और कुटुम्ब के नेह सनी।
जीवन मरण को जो है साथी, ता हरि की दासी नाहिं बनी॥
वृन्दावन भी छूटि जात है, मोहनी रोवै घनी घनी।

(१०८)

अलबेली अली कोई प्रेम को पंथ गहोरी।
करि करि दर्श प्रिया प्रीतम के, जिय में मग्न रहोरी॥
निर्भय होइ तुम घुसौ कुन्ज में, जीवन लाभ लहोरी।
मन मोहो देखि छवि अपने नयना शीतल करोरी॥
वेद रीति कुल कानि छांड़िकै, गुरुजन से नेक न डरोरी।
मोहिनी के मन मोहन सनेही, उनसे नेह लगोरी॥

(१०९)

दीनन के प्रतिपाल खबरि लो मेरी।
भक्तवत्सल प्रभु विरद संभारो, मैं हू अब भई तेरी॥

सबही को पालौ पोषौ, मोहूं दीन घर आय करहु फेरी।
सब दिशि हेरि थकी मैं, अब क्यों करि राखी देरी॥
पुत्र सुता लई शरण प्रभुजी, मोहूं को अब लेवहु टेरी।
मोहिनी चरण पड़ी अति रोवै, लेहु खबरि मेरी॥

(११०)

अपुन भई सबै अब भोरी।
तुम हरि को पीताम्बर झटको, उन मोतिन लर तोरी॥
मांगत दान जबाब न देहौ, ऐसी तुम बड़े घर की छोरी।
डर नहिं मानत नन्द नन्दन को, आन करत झक झोरी॥
तुम हो नारि गोकुल गांव की, त्रिभुवन में इन सम कोरी।
मोहिनी कहति समुझाय सखिन सो, इनसों नाहिं लरोरी॥

(१११)

भक्त हेतु अवतार धरौं।
कर्म धर्म के वश में नाहीं, योग यज्ञ से दूर रहौं॥
दीन गुहार सुनत उठि धावों, भक्ति को मान करौं।
भाव अधीन रहौं सदा, भक्त को सुख दे दुःख हरौं॥
कोटि ब्रह्माण्ड को नायक मैं, काहू सों नेकु न डरौं।
मोहिनी के हृदय में प्रकट होत हौं, तहां से नाहिं टरौं॥

(११२)

बीति गई सो जान दे, अब न होहु नयनन से न्यारे।
तात न मातु बन्धु नहिं कोई, केवल श्याम हमारे॥

समय पड़े कोउ काम न आवै, रत्तक नन्द दुलारे।
बहुतक जन मनमोहन तुमने, भव सागर से उबारे॥
दुष्ट विदारक जन सुख दायक, पापिनिहँ पाप सब टारे।
मेरी वेर देर क्यों कृपणता, लियो मौन व्रत धारे॥
मंगल धाम श्री वृन्दावन मंगल, रूप प्रिया प्रीतम प्यारे।
मोहिनी छवि निरखति दोउन की, जो मेरे नयनन के तारे॥

(११३)

मनमोहन नख पर गिरिवर धारो।
इन्द्र कोप कियो व्रज ऊपर,
महा प्रलय जल डारो॥
मातु यशोदा खड़ी पुकारै,
कोई मेरे सुत को बोझ उतारो।
चौथे पन मोहिं पुत्र मिलो है,
ताकी विपत्ति को टारो॥
गोप ग्वाल सब लिये लकुटियां,
गिरिवर आय संभारो।
सात दिवस और सात रयन तक,
भयो कोलाहल भारो॥
बूंद न एक गिरी व्रज ऊपर,
रत्तक नन्द दुलारो।

देखी महिमा नट नागर की,
भय वश मानि इन्द्र तब हारो ॥
कर जोरे इन्द्र भये ठाढ़े,
मैं हूं दास भयो तिहारो ।
बुद्धि के प्रेरक तुम्हीं हो स्वामी,
मेरो क्यों विचार बिगारो ॥
सर्व पूज्य यह गिरिवर,
सात दिवस प्रभु नख पर धारो ।
याके दर्श पर्श ते कलियुगी,
जीवन को होत निस्तारो ॥
जा कोई जाकी महिमा गावै,
सोही होवे भक्त तिहारो ।
मोहिनी पतित कछु लायक नाहीं,
केवल गिरिधर एक सहारो ॥

(११४)

सुन्दर ज्योति श्याम श्यामा की, कौन यत्न करि पाऊँ ।
ना जप ना तप युगल तुम्हहिं, कौन सी भाँति रिझाऊँ ॥
ना चहिये मोहिं मुक्ति, भक्ति के नाम बिकाऊँ ।
सुन्दर रूप प्रिया प्रीतम को, नित उठि दर्शन पाऊँ ॥
मोहिनी में भक्ति को लेश नहीं है, कैसे श्याम मन भाऊँ ।

(११५)

जिऊँगी मैं तो चरण सरोज निहारो ।
सुन्दर धाम श्री वृन्दावन, तीन लोक ते न्यारो ॥
राजा श्याम राधिका रानी, उन्हीं चरण बलिहारी ।
कुञ्ज लता अरु कुञ्ज वीथिन में,रास करत हैं कुञ्ज विहारी ॥
मोहन मो पै जादू कीन्हीं, ऐसी मोहिनी डारी ।
रूप लावण्य पै मोहित नयना, बहै अश्रु विन्दु की धारी ॥
तिरछी चितवनि ने वश कीन्हों,
मंद-मंद मुसक्यावत प्रिय प्यारी ॥

(११६)

व्रजराज बिनु कौन हरै दुःख मेरो ।
कौन सुनैगो दीनानाथ बिनु, कौन को दीनन टेरो ॥
दीन उधारण बानि श्याम की, वाही सों करो निहोरो ।
दारुण दुःख विपत्ति अति मोहन, आय करो निरवेरो ॥
नयनन आगे बसियो सांवरे, मन में होय उजेरो ।
प्रेमी विना मरम को जानै, तो बिना मोहिं अंधेरो ॥
बिनु छवि निरखैं मोहन तेरी, मोको दुःख घनेरो ।
दीन जनन की लेहु खबरिया, वेगि ही मो तन हेरो ॥
आय संभारहु मोहन मोहिनी को, मेरे घर न खेरो ॥

(११७)

सब सुधरेगी व्रजराज के सुधारे ।
जब २ भीर जनन पै देखैं, आवै नन्द दुलारे ॥
गज और ग्राह लड़े जल भीतर, गज ह्वै दीन पुकारे ।
आधो नाम लेन न पायो, आतुर गजहिं उबारे ॥
ध्रुव प्रह्लाद की खूब बनायी,
भक्तन को न देखि सकत दुःखारे ।
एक दिन भात भरो नरसी को, समधी जी के द्वारे ॥
भक्तन को दुःख टारि दयानिधि, कीन्हें भक्त सुखारे ।
मोहिनी के वेर कहां पड़े सोये, क्यों न नयन उघारे ॥

(११८)

व्रजवल्लभ चित्त चोर हमारो ।
है चित्त चोर नन्द को नन्दन, मोहन मोर मुकट वारो ।
चित्त चुराय ले गयो सांवरिया, मेरो राधारमण प्यारो ।
रहि रहि हूक उठत घट अन्दर, विरह व्यथा तन जारो ॥
तन जार कै छार भयो, कब मिलैगो श्री नन्द दुलारो ।
आवन आवन आस लगी रही, नेकु तो दया विचारो ॥
मो दुःखिया के मनमोहन, दोऊ नयनन को तारो ।

अब तो मोहन दर्श दिखावो, वेगि करहु निस्तारो ॥
मोहिनी दुःखिया के जीवन धन, कब आवोगे व्रज वारो ॥

(११९)

दयालु हरि तोहिं दरद नहिं आवै ।
तड़फति डोलूँ तेरे दर्श को, क्यों न दरश दिखावै ॥
काहू सघन वन मोहन प्यारो, वंशी मधुर बजावै ।
अमृत बूंद पड़ै न श्रावण में, क्यों इतनो मोहि तड़फावै ॥
तेरे हित मैं सवरी सूखी, वैदहू रोग बतावै ।
मूर्ख वैद जानहि का मन की, मोहिं श्याम विरह सतावै ॥
अघ अपराध काटि मोहिनी के, मोहिं तो दर्श दिखावो ।
कृपाकी कोर करहु नन्द नँदन, मोहिं तो वृन्दावन पहुंचावो ॥

(१२०)

मेरो मन धीरज नाहिं धरै ।
जब से बिछुरी प्रिया प्रीतम से, दुःख ही दुःख परै ॥
अब तो दर्श देहु युगल वर, विरह व्यथा से देह जरै ।
मोहिनी अंत समय में पुकारै, केवल कृपा बल से उबरै ॥

(१२१)

प्रणाऊं वे श्री रसिक अनन्य ।
जिनके युगल किशोर हृदय में,
स्वप्न न कबहूँ आवत अन्य ॥

बसत निरंतर तजत न पल क्षण,
प्राण सजीवन वृन्दारण्य ।
दर्शन करत मंदिरन में,
सुनत भागवत कथा सुपुण्य ॥

(१२२)

धनि धनि नदिया नाथ प्रभु, धनि धनि राधा नाथ।
जय जय मोहिनी पुकारती, कबहुं न छांडहु साथ ॥
मन की अटपट छांडि के, झटपट भज घनश्याम।
पलक घड़ी क्षण क्षण में, बीती उमरि तमाम ॥

श्री मोहिनी देवी जी की प्रकाशित पुस्तकें

१. श्री गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र हिन्दी पद्यानुवाद
२. श्री भजन तरंगिणी
३. श्री कविता कुञ्ज
४. श्री राधारमण पदावली

अप्रकाशित ग्रन्थों की सूची

१—श्रीकृष्णायन २—श्रीकृष्ण अवतार का संक्षिप्त चरित्र ३—श्री गौराङ्ग अवतार ४—अनेक अवतारों के संक्षिप्त चरित्र ५—व्रज महिमा ६—वृन्दावन वास उत्कंठा ७—सप्तशती ८—हंसदूत ९—शुक दूत १०—नारद चरित्र ११—कुमार चरित्र आदि आदि।

दोहा—मोहिं तो हरि की प्रेरणा, वे स्वयं जतावत ज्ञान।
बैठे उर लिखवावत वे ही, मोहन चतुर सुजान॥
सोवत जागत वे हरि, देत रहत आदेश।
लिखहु मोहिनी चरित यह, प्रेम की कथा विशेष॥

सदुपदेश

ऊधव हरि से कहो हम गोपिन मति बिसारो।
अंखियन में बसत जियरे में बसत, हियरे में बसत वह प्यारो॥
तन में बसै मन में बसै रसना में बसै, अंग अंग में बसै नंद दुलारो।
सुधि में बसै बुधि में बसै, नस नस में बसै वह व्रज वारो॥
वन में बसै घर हू में बसै, वंशीवट बसै कुञ्जन से होत न न्यारो।
मोहिनी के राधारमण सनेही, केवल एक आसरो तिहारो॥

१—नर तन दुर्लभ पाय के, भजिये श्याम उदार।
जग में हू नर ना हँसै, पड़े न यम की मार॥

२—व्रज वीथिन में मन धरहु, नहिं जाउ कहूं अन्त।
अन्त जाई के नहिं मिलैं, व्रजवासी हरि संत॥

३—तन धन दारा धाम सुत, माया को परिवार।
इनमें भूलै मन मती, करहु श्याम सों प्यार॥

४—छिन भंगुर या देह में, काहि बढ़ावहु नेह।
नेह करहु नन्दलाल सों, पहुचहुं हरि के गेह॥

५—श्याम गति अरु श्याम मति, श्याम हमारो नेंह।
श्याम श्माम रटना लगी, नैनन बरसत मेंह॥

६—इन नैनन की इमि दशा, सावन भादों मास।
निशिदिन बरसत ये रहत, श्याम दरस की आस॥

७—या संसार समुद्र सों, होवै बेड़ा पार।
हरि चरनन की नाव को, निरखहु बारम्बार॥

संकीर्तन प्रेस, वृन्दावन।